आज़ादी का अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान

अभ्यास पुस्तिका

वेद-विभूषण - I वर्ष / उत्तरमध्यमा - I वर्ष / कक्षा 11वीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम॥
अस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते तदेतेनोपेक्षितव्यम्-
आदित्यतोऽस्य दीप्तिर्भवति।
सैषा चतुर्महाद्वीपा नानाद्वीपसमाकुला।
पृथिवी कीर्तिता कृत्स्ना पद्माकारा मया द्विजाः॥
तदेषा सान्तरद्वीपा सशैलवनकानना।
पद्मेत्यभिहिता कृत्स्ना पृथिवी बहुविस्तरा॥
स ईं वृषाजनयत् तासु गर्भं स ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति।
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णोऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष॥
जम्बूप्लक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलिश्चापरो महान्।
कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चेति सप्तमः॥
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापरः।

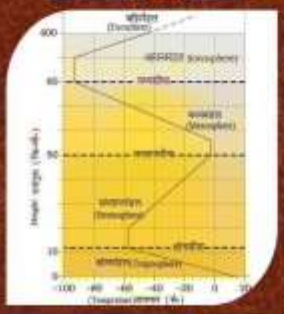

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)
Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	
अध्याय - 1	पृथिवी की उत्पत्ति और विकास	3-4
अध्याय - 2	पृथिवी की संरचना	5-9
अध्याय - 3	वायुमण्डल	10-12
अध्याय - 4	जल और जलवायु	13-15
अध्याय - 5	पृथिवी पर जैवमण्डल	16-17
अध्याय - 6	प्राकृतिक संकट एवं आपदाएँ	18-19
	इतिहास	
अध्याय- 7	प्रारम्भिक समाज (360 लाख- 1 ई. पू. वर्ष तक)	20-22
अध्याय - 8	विश्व के प्रमुख साम्राज्य (100 ई.-1300 ई.तक)	23-24
अध्याय - 9	विश्व का बदलता परिदृश्य (1300- 2000 ई. तक)	25-28
अध्याय - 10	भारत में मन्दिर स्थापत्य	29-30
अध्याय - 11	भारत की सांस्कृतिक विरासत	31-32
अध्याय - 12	भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल	33-34
	राजनीति विज्ञान	
अध्याय - 13	संविधान	35-37
अध्याय - 14	भारतीय शासन व्यवस्था के अङ्ग	38-41
अध्याय - 15	स्थानीय शासन	42
अध्याय - 16	भारत व पड़ोसी देश	43-45
	अर्थशास्त्र	
अध्याय - 17	भारतीय अर्थव्यवस्था	46-48
अध्याय - 18	निर्धनता व मानव पूंजी	49-50
अध्याय - 19	आधारिक संरचना	51-52
	समाजशास्त्र	
अध्याय - 20	सामाजिक संरचना और परिवर्तन	53-54
अध्याय - 21	पर्यावरण और समाज	55-56
अध्याय - 22	प्रमुख समाजशास्त्री	57-60
अध्याय - 23	वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	61-62
	परिशिष्ट	63-64

अध्याय- 1

पृथिवी की उत्पत्ति और विकास

- भूगोल शब्द संस्कृत भाषा के दो शब्दों, भू+गोल से मिलकर बना है, जिसका अर्थ **'गोल पृथिवी'** है। भूगोल को अंग्रेजी भाषा में Geography कहते हैं।
- Geography शब्द, ग्रीक भाषा के दो शब्दों Geo (पृथिवी)+Graphs (वर्णन) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ पृथिवी का वर्णन या अंकन करना है।
- प्रसिद्ध ग्रीक विद्वान् 'इरेटॉस्थेनीज' (276-194 ई. पूर्व) ने सर्वप्रथम Geographia (भूगोल) को एक विशिष्ट धरातलीय विज्ञान के रूप में मान्यता दी थी। अत: 'इरेटॉस्थेनीज' को भूगोल का जनक कहा जाता है।
- Geo शब्द संस्कृत भाषा के 'ज्या' से बना है। अमरकोष के द्वितीय काण्ड में उल्लिखित पृथिवी के 27 नामों में एक नाम 'ज्या' भी है, जो ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से पृथिवी का बोध कराता है।
- **अल्फ्रेड हैटनर** के अनुसार- "भूगोल धरातल के विभिन्न भागों में कारणात्मक रूप से सम्बन्धित तथ्यों में भिन्नता का अध्ययन करता है"।
- भूगोल का अध्ययन क्षेत्र सैन्य सेवाओं, पर्यावरण और आपदा प्रबन्धन, के साथ-साथ विविध प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों तक विस्तृत है।
- भूगोल की शाखाएं जैसे- सामाजिक, राजनीतिक, जनसंख्या, आर्थिक भूगोल आदि का सामाजिक विज्ञान से घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि इनमें से प्रत्येक में स्थानिक विशेषताएँ मिलती हैं। भूगोल विषय का भौमिकी, मौसम, जल, जीव, वनस्पति, पारिस्थितिकी आदि प्राकृतिक विज्ञानों से भी सहसम्बन्ध है।
- भूपटल पर स्थित ऐसे विशिष्ट प्राकृतिक और मानवीय क्रिया-कलाप जो स्थानिक संरचना का निर्माण करते हैं, उनका क्रमबद्ध अध्ययन ही 'क्रमबद्ध उपागम' कहलाता है। इस उपागम के प्रवर्तक जर्मन भूगोलवेत्ता 'अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट' (1769-1859 ई.) हैं।
- विश्व को पदनुक्रमिक रूप में प्रदेशों या क्षेत्रों में विभाजित कर विविध प्रदेशों के भौगोलिक तथ्यों का समग्रता से अध्ययन करना 'प्रादेशिक उपागम' कहलाता है। इसके प्रवर्तक जर्मन भूगोलवेत्ता 'कार्ल रिटर' (1779-1859 ई.) हैं।
- आरम्भिक सिद्धान्त के रूप में इमैनुवल कान्ट द्वारा 1755 ई. में प्रतिपादित 'वायव्य राशि परिकल्पना' है। 1796 ई. में लाप्लेस ने इस सिद्धान्त में संशोधन कर अपनी 'निहारिका परिकल्पना' प्रस्तुत की थी। 1900 ई. में चेम्बरलेन व मोल्टन ने 'द्वैतारक सिद्धान्त' प्रतिपादित किया था।

- पृथिवी की उत्पत्ति और संरचना सम्बन्धी आधुनिक सिद्धान्त को विस्तारित ब्रह्माण्ड परिकल्पना (बिगबैङ्ग सिद्धान्त) कहा जाता है। 1920 ई. में एडविन हब्बल ने बताया था कि, ब्रह्माण्ड का विस्तार हो रहा है।
- ब्रह्माण्ड के विस्तार का अर्थ है, आकाश गङ्गाओं के बीच की दूरी में विस्तार होना। जार्ज लैमेत्रे ने सन् 1927 ई. में बिगबैङ्ग सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। महाविस्फोट (बिगबैङ्ग) की घटना लगभग 13.7 अरब वर्ष पूर्व हुई थी।
- पदार्थों के एकत्रीकरण के कारण आकाशगङ्गाओं का निर्माण प्रारम्भ हुआ। आकाशगङ्गाओं में असंख्य तारा समूह होते हैं। विस्तृत होती हुई निहारिका में अनेक गैसीय समूहों से लगभग 5 से 6 अरब वर्ष पूर्व अनेक तारों का निर्माण हुआ।
- प्रकाश वर्ष दूरी की माप है। प्रकाश की गति तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकेण्ड है। एक वर्ष में प्रकाश द्वारा तय की गई दूरी प्रकाश वर्ष कहलाती है। आकाशगङ्गाओं और अन्य आकाशीय पिण्डों की दूरी प्रकाश वर्ष में मापी जाती है।
- सौरमण्डल का जनक निहारिका को माना जाता है। निहारिका के ध्वस्त होने और केन्द्र बनने की प्रक्रिया लगभग 5.6 अरब पूर्व और पृथिवी समेत सभी ग्रहों का निर्माण लगभग 4.6 से 4.56 अरब वर्ष पूर्व हुआ है।
- हमारे सौरमण्डल में सूर्य (तारा), 8 ग्रह, 63 उपग्रह, लाखों क्षुद्रग्रह (ग्रहों के टुकड़े), धूमकेतु व काफी मात्रा में धूलकण व गैसें हैं। बुध, शुक्र, पृथिवी और मङ्गल को 'आन्तरिक ग्रह' कहा जाता है। बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण को बाह्य ग्रह कहा जाता है।
- आर्यभट्ट ने चौथी शताब्दी में कहा था कि पृथिवी अपने अक्ष पर घूर्णन करती है। अपनी गणना में पृथिवी का आवर्तकाल 23 घण्टा 56 मिनट 4.1 सेकेण्ड बताया था।
- लगभग 4.44 अरब वर्ष पूर्व धिया नामक एक आकाशीय पिण्ड पृथिवी से टकराया था। इस टक्कर से पृथिवी का एक अंश टूटकर अन्तरिक्ष में पृथिवी की परिक्रमा करने लगा जो चन्द्रमा कहलाया।
- विभेदन की प्रक्रिया द्वारा पृथिवी का पदार्थ अनेक परतों जैसे- पर्पटी (Crust), प्रवार (Mantle) और क्रोड (Core) में विभाजित हो गया।
- ठण्डी हो रही पृथिवी के साथ वायुमण्डल में जलवाष्प संघनित होने लगे थे। परिणामस्वरूप अतिवृष्टि के कारण वर्षाजल धरातल के गर्तों में जमा होने लगा, जिससे सागरों, महासागरों आदि का निर्माण हुआ।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथिवी पर जीवन की उत्पत्ति एक रासायनिक प्रतिक्रिया का परिणाम है। लगभग 3.80 करोड़ वर्ष पूर्व एक कोशीय जीवाणुओं से पृथिवी पर जीवन का आरम्भ माना जाता है। पृथिवी पर मानव का विकास लगभग 20 से 50 लाख वर्ष पूर्व से हुआ माना जाता है।

अध्याय-2

पृथिवी की संरचना

- पृथिवी के धरातल पर चट्टानों की मोटी परत है। पृथिवी का यह स्वरूप निरन्तर चलने वाली वाह्य एवं आन्तरिक भूगर्भिक प्रक्रियाओं का परिणाम है।
- पृथिवी की आन्तरिक संरचना कमल पुष्प के समान परतदार है, जिसे तीन भागों में बाँटा गया है- 1. भूपर्पटी 2. मैंटल 3. क्रोड।
- पृथिवी का सबसे उपरी और ठोस भाग भूपर्पटी कहलाता है। यह सिलिका (Silica) व एलुमिना (Alumina) से मिलकर बना है अतः इसे सिआल (Si-Al) भी कहते हैं।
- मैंटल, भू-पर्पटी के नीचे वाला भाग है। इसका निर्माण सिलिका (si) व मैग्नेशियम (mg) से मिल कर होने के कारण इसे सीमा (Si-Ma) कहते हैं। भू-पर्पटी व मैंटल से मिलकर ही स्थलमण्डल का निर्माण होता है।
- क्रोड का निर्माण निकिल (Nickle) व लोहे (Ferrus) से मिलकर हुआ है। अतः इसे संक्षेप में निफे (Ni-Fe) भी कहा जाता है। इस क्रोड के भी दो भाग- वाह्य और आन्तरिक क्रोड हैं।
- पृथिवी की त्रिज्या 6370 किलोमीटर और आन्तरिक तापमान लगभग 6000 डिग्री सेल्शियस है। भूगर्भ ज्ञान के दो प्रमुख स्रोत हैं- (क) प्रत्यक्ष स्रोत (ख) अप्रत्यक्ष स्रोत।
- पृथिवी के स्थल मण्डल में उपलब्ध ठोस पदार्थ और चट्टानें हैं, जिन्हें हम खनन द्वारा प्राप्त करते हैं। इन पदार्थों और चट्टानों के प्रेक्षण और विश्लेषण द्वारा भूगर्भ की संरचना का अध्ययन किया जाता है।
- ज्वालामुखी वे स्थल होते हैं जहाँ से लावा के रूप में गैस, राख, चट्टानें आदि पदार्थ, पृथिवीके अन्दर से निकलकर धरातल पर आते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा इनका विश्लेषण कर पृथिवी की आन्तरिक संरचना को जानने का प्रयास किया जाता है।
- दक्षिण अफ्रीका में सोने की खानें 3-4 किमी. तक गहरी हैं। इससे अधिक गहराई में जाना सम्भव नहीं हैं क्योंकि गहराई बढ़ने से तापमान अधिक हो जाता है।
- अभी तक सबसे गहरा प्रवेधन 12 किमी की गहराई तक आर्कटिक महासागर में कोला नामक स्थान पर किया गया है। अभी तक सबसे गहरा प्रवेधन 12 किमी की गहराई तक आर्कटिक महासागर में कोला नामक स्थान पर किया गया है।
- ज्वालामुखी उद्गार से निर्मित आकृतियों के आधार पर ज्वालामुखी के मुख्य निम्न प्रकार हैं- 1. शील्ड ज्वालामुखी 2. मिश्रित ज्वालामुखी 3. ज्वालामुखी कुण्ड 4. बेसाल्ट प्रवाह क्षेत्र 5. कटक ज्वालामुखी। पृथ्वी के सतह के नीचे निर्मित होने वाला चट्टानों का पिघला हुआ रूप मैग्मा है।

- ज्वालामुखी उद्गार से निकलने वाला लावा धरातल पर पहुँच कर ठण्डा होता है तो ज्वालामुखी शैलों का निर्माण होता है। जब लावा धरातल के नीचे ठण्डा होकर जमता है तो बैलोथिक, लैकोथिक, डाइक जैसी अनेक प्रकार की अन्तर्वेधी स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।
- अप्रत्यक्ष स्त्रोत में पदार्थ के गुणधर्म का विश्लेषण, उल्काओं का अध्ययन, गुरुत्वाकर्षण, चुम्बकीय क्षेत्र, भूकम्प सम्बन्धी क्रियाएँ आदि शामिल हैं।
- भूगर्भ के ज्ञान का प्रमुख अप्रत्यक्ष स्त्रोत भूकम्पीय गतिविधियाँ हैं। इनके द्वारा हमें पृथिवी के विभिन्न परतों का सम्पूर्ण चित्र प्राप्त होता है। भूकम्प का अर्थ 'पृथिवी में कम्पन होना' है।
- पृथिवी के अंदर भूपर्पटी के शैलों में गहरी दरारें होती हैं। इन दरारों के कारण शैलखण्ड विपरीत दिशा में खिसक जाते हैं। इस कारण भूकम्प तरङ्गों के रूप में ऊर्जा मुक्त होती है। ऊर्जा निकलने वाले स्थान को भूकम्प का 'उद्गमकेन्द्र' तथा इसके निकटतम बिन्दु को 'उपरिकेन्द्र' कहा जाता है। सभी भूकम्प, पृथिवी की सतह से 200 किमी की गहराई तक से उत्पन्न होते हैं।
- विज्ञान की वह शाखा जिसमें भूकम्प का अध्ययन किया जाता है उसे सिस्मोलॉजी कहते है। सिस्मोग्राफ नामक यन्त्र की सहायता से भूकम्प की तरङ्गों का अध्ययन किया जाता है।
- रिक्टर स्केल से भूकम्प की तरङ्गों की गति मापी जाती है। इसमें 0 से 9 तक मान होता है। जिस भूकम्प का मान 7 रिक्टर स्केल होता है, वह विनाशकारी भूकम्प माना जाता है। मरकेली स्केल से भी भूकम्प की तरङ्गों की गति मापी जाती है। मरकेली स्केल में 1 से 12 तक मान होता है।
- मुख्यत: भूकम्प के पाँच प्रकार हैं- 1. विवर्तनिक भूकम्प 2. ज्वालामुखी भूकम्प 3. नियात भूकम्प 4. विस्फोट भूकम्प 5. बाँध जनित भूकम्प। रिक्टर पैमाने पर 5 से अधिक तीव्रता वाले भूकम्प अधिक विनाशकारी होते हैं।
- विश्व में सर्वाधिक भूकम्प प्रशान्त महासागर में आते है। विश्व में सर्वाधिक भूकम्पों वाला महाद्वीप एशिया और सबसे कम भूकम्पों वाला महाद्वीप आस्ट्रेलिया महाद्वीप है। सर्वाधिक भूकम्पों वाला देश जापान है। भारत में सर्वाधिक भूकम्प वाला क्षेत्र हिमाचल प्रदेश है। भूकम्प की दृष्टि से सबसे सुरक्षित क्षेत्र प्रायद्वीप भारत है। भूकम्प से सबसे ज्यादा विनाश होने की सम्भावना दिल्ली में बनी रहती है।
- पृथिवी का धरातल पृथिवी के अन्दर उत्पन्न हुए 'अन्तर्जनित बलों' और सूर्य से प्राप्त उर्जा द्वारा प्रेरित 'वहिर्जनित बलों' से प्रभावित होता है। अन्तर्जनित बल भू-आकृति निर्माण करने वाले बल हैं। वहिर्जनित बल के कारण उभरी भू-आकृतियों का घर्षण और निम्न क्षेत्रों का भराव होता है।
- अपरदन के द्वारा धरातल पर उच्चावच के मध्य अन्तर के कम होने को 'तल सन्तुलन' कहते हैं।
- धरातलीय पदार्थों पर अन्तर्जनित एवं बहिर्जनित बलों द्वारा भौतिक दाब तथा रासायनिक क्रियाओं के कारण भू-पटल के विन्यास में हुए परिवर्तनों को भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ कहा जाता है।

- ऐसी प्रक्रियाएँ जो पृथिवी की पर्पटी के भीतर, पृथिवी की आन्तरिक ऊर्जा से संचालित होती है, अन्तर्जनित प्रक्रियाएँ कहलाती हैं। पटल विरूपण और ज्वालामुखीयता ऐसी ही प्रक्रियाएँ हैं।
- धरातल के निर्माण, सञ्चालन और उत्थापित करने वाली सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित रूप से पटल विरूपण कहलाती हैं। इसके कारण शैलों में कायान्तरण होता है।
- वे प्रक्रियाएँ जो धरातल पर सूर्य और वायुमण्डलीय ऊर्जा से संचालित तथा अन्तर्जनित शक्तियों से नियंत्रित विवर्तनिक कारकों से उत्पन्न प्रवणता से सहायता प्राप्त करती हैं, वहिर्जनित प्रक्रियाएँ कहलाती हैं। सभी वहिर्जनित भू-आकृतिक प्रक्रियाओं को अनाच्छादन भी कहते हैं।
- वहिर्जनित प्रक्रिया के रूप में अपक्षय भौतिक, रासायनिक तथा जैविक प्रक्रिया है। इसके कारण शैल या चट्टानें एक ही स्थान पर विखण्डित होती रहती हैं।
- वृहत् सञ्चलन की प्रक्रिया में गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से बड़ी मात्रा में मिट्टी, रेत व शैलों का ढाल के अनुरूप स्थानान्तरण होने लगता है। वृहत् सञ्चलन दो प्रकार के होते हैं- मन्द एवं तीव्र सञ्चलन।
- धरातलीय हलचलों के कारण मिट्टी या शैलों का खिसकना ही भूस्खलन है। इस प्रक्रिया में मिट्टी, चट्टानें, मलबा आदि पदार्थ ढाल की ओर खिसककर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित हो जाते हैं।
- **अपरदन की प्रक्रिया में प्रवाही** जलधाराओं, हिमनद, भूमिगत जल, वायु द्वारा शैलों, मृदा आदि को अपरदित होकर विघटित मलबे ढाल की ओर एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवाहित होते हैं। जहाँ ढाल में कमी आ जाती है, तो अपरदित पदार्थ का निक्षेपण अर्थात् जमाव शुरु हो जाता है।
- हमारे धरातल पर मृदा, प्राकृतिक तत्त्वों का ऐसा समुच्चय है जिसमें जीवों के पोषण की क्षमता होती है। मृदा निर्माण में भौतिक, रासायनिक एवं जैविक क्रियाएँ निरन्तर चलती रहती हैं। अत: मृदा को गतिशील माध्यम कहा जाता है।
- पृथिवी पर पाये जाने वाले विभिन्न तत्त्व साथ मिलकर नये पदार्थों का निर्माण करते हैं, जिन्हें खनिज कहा जाता है। खनिज का निर्माण दो या दो से अधिक तत्वों से मिलकर होता है।
- आन्तरिक परत में दबी शैलों से खनिजों को बाहर निकालने की प्रक्रिया को खनन कहा जाता है। भूपर्पटी पर लगभग 2000 प्रकार के खनिजों को पहचान कर उनका नामाङ्कित किया जा चुका है।
- खनिज प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं तथा इनका एक निश्चित रासायनिक संघटन होता है। ये ठोस, तरल व गैस तीनों अवस्थाओं में पाये जाते हैं।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु तत्त्व होते हैं, धात्विक खनिज कहलाते हैं, जैसे- सोना, चांदी, तांबा, सीसा, जस्ता, लोहा, जिंक, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट, निकेल, प्लैटीनम आदि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु तत्त्व नहीं पाये जाते हैं अधात्विक खनिज कहलाते हैं, जैसे- संगमरमर, चूना पत्थर, अभ्रक, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, बलुआ पत्थर, कोयला आदि।

- पृथिवी की भूपर्पटी का निर्माण विभिन्न शैलों हुआ है। शैल का निर्माण एक या एक से अधिक खनिजों से मिलकर होता है। निर्माण पद्धति के आधार पर शैलों को तीन प्रकारों में बाँटा गया है- 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैल 3. कायान्तरित शैल।
- शैल चक्र एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। शैल चक्र की प्रक्रिया में पुरानी शैलें अपने मूल रुप से परिवर्तित होकर नया रूप ले लेती है।
- भूपृष्ठ पर निर्मित शैलें प्रत्यावर्तन के कारण पृथिवी के आन्तरिक भाग में जा सकती हैं, जहाँ ये तापमान बढ़ने के कारण मैग्मा में पुन: परिवर्तित हो जाते हैं।
- पृथिवी का 29% भाग पर स्थल और 71% भाग पर जल है। पृथिवी पर वर्तमान के महाद्वीपों और महासागरों का निर्माण लगभग 3.8 अरब वर्ष पूर्व हुआ था।
- आज के सभी महाद्वीप और महासागर निर्माण के आरम्भिक समय में एक ही थे। स्थल भाग को 'पैंजिया' और उसके चारों ओर फैले विशाल जलराशि (महासागर) को 'पैंथालासा' कहा गया है।
- 1912 ई. में अल्फ्रेड वेगनर ने अपने 'महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त' में यह माना कि आज के सभी महाद्वीप लगभग 30 करोड़ वर्ष पूर्व एक ही भूखण्ड के भाग थे। वेगनर ने इसे 'पैंजिया' नाम दिया है।
- पैंजिया के विभाजन से दो बड़े महाद्वीपीय स्थल भाग अस्तित्व में आये- लारेशिया (उत्तरी भूखण्ड) और गोंडवाना लैंड (दक्षिणी भूखण्ड)। लगभग 5-6 करोड वर्ष पूर्व लारेशिया और गोंडवाना लैंड अनेक खण्डों में विभाजित होकर वर्तमान महाद्वीपों का आकार धारण कर लिया था। भारत इसी गोडवाना लैण्ड का भाग है।
- वेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन का पहला कारण 'ध्रुवीय फ्लीइंग बल' को बताया, जो पृथिवी के घूर्णन से सम्बन्धित है। दूसरा कारण 'ज्वारीय बल' को बताया है।
- आर्थर होम्स ने सन् 1928 ई. में अपने संवहन धारा सिद्धान्त बताया कि भूगर्भ में रेडियोएक्टिव तत्वों से उत्पन्न ताप भिन्नता के कारण मेंटल में पैदा होने वाली संवाहनीय धाराएँ एक तन्त्र के रूप में गतिशील हैं,जो प्लेटों को गति प्रदान करती हैं।
- 1961 में हेनरी हेस ने सागरीय अधःस्तल के विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था।
- सन् 1967 ई. में मैकेन्जी, पारकर और मोरगन ने प्लेट विवर्तनिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया था। महाद्वीपीय एवं महासागरीय स्थलखण्डों से मिलकर बना, ठोस व अनियमित आकार का विशाल भू-खण्ड प्लेट कहलाता है। ये प्लेटें दुर्बलता मण्डल पर एक दृढ़ इकाई के रूप में क्षैतिज अवस्था में गतिशील हैं।
- स्थलमण्डल पर सात मुख्य प्लेटें- अण्टार्कटिक प्लेट, उत्तर अमेरीकी प्लेट, दक्षिण अमेरीकी प्लेट, प्रशान्त महासागरीय प्लेट, इण्डो-आस्ट्रेलियन प्लेट, अफ्रीका प्लेट, यूरेशियाई प्लेट हैं। अन्य छोटी प्लेटें- कोकोस प्लेट, नजका प्लेट, अरेबियन प्लेट, फिलिपीन प्लेट, कैरोलिन प्लेट, फ्यूजी प्लेट है।

- 20 करोड़ वर्ष पूर्व पैन्जिया के विभाजन के बाद भारत उत्तर की ओर खिसकते हुए 4-5 करोड़ वर्ष पूर्व एशिया महाद्वीप से टकराया और हिमालय का निर्माण हुआ। इसी समय लावा प्रवाह के कारण दक्षिण ट्रेप का निर्माण हुआ।
- अथर्ववेद एक मन्त्र में 'तिस्र: पृथिवी:' (19.27.3) कहा गया है। इस मन्त्र में गुणधर्म के आधार पर पृथिवी के तीन खण्ड है। महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र (भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात्- 3.26) के व्यास भाष्य में 'सप्तद्वीपा वसुमती' कहा है।
- अग्नि पुराण में सात द्वीप बताये गये हैं- जम्बूप्लक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलिश्चापरो महान्। कुश: क्रौञ्चस्तथा शाक: पुष्करश्चेति सप्तम:॥ (108.1) जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंञ्च, शाक और पुष्कर ये पृथिवी के सात द्वीप हैं।
- अग्निपुराण के गणभेद नामक अध्याय में सात सागरों के नाम इस प्रकार बताये गये हैं- लवण: क्षीरसंज्ञश्च घृतोदो दधिसंज्ञक:। सुरोदेक्षुरसोदो च स्वादूद: सप्तमो भवेत्॥ चत्वार: सागरा: ख्याता: पुष्करिण्यश्च ता: स्मृता:॥ अर्थात- लवण, क्षीर, घृत, दधि, सुरा, इक्षुरस और स्वादु सात सागर हैं। प्रसिद्ध चार विशाल सागरों को पुष्करिणी भी कहा जाता है।

अध्याय- 3

वायुमण्डल

- अमरकोष में वायु के बीस नामों का उल्लेख है- श्वसन: स्पर्शन: वायुर्मातरिश्वा सदागति:। पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगा। समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणा:। नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जना:। (122-125) श्वसन:, स्पर्शन:, वायु:, मातरिश्वा, सदागति:, पृषदश्व:, गन्धवाह:, अनिल:, आशुग:, समीर:, मारुत:, मरुत्, जगत्प्राण:, समीरण:, नभस्वान्, वात:, पवन:, पवमान:, प्रभञ्जन:।
- पृथिवी के ऊपर वायु के आवरण को वायुमण्डल कहते हैं। इसका निर्माण विभिन्न गैसों के अतिरिक्त जल वाष्प व धूलकणों से मिलकर हुआ है। पृथिवी के कुल द्रव्यमान के प्रमुख घटक के रूप में 99% वायु, पृथिवी की सतह से 32 कि.मी. की ऊँचाई तक स्थित है।
- पृथिवी की सतह से 120 कि.मी. की ऊँचाई पर ऑक्सीजन अतिन्यून हो जाती है। 90 कि.मी की ऊँचाई तक ही कार्बन डाई ऑक्साइड और जलवाष्प पाये जाते हैं। हमारे वायुमण्डल का दूसरा महत्वपूर्ण घटक ओजोन है, जो पृथिवी की सतह से 10-50 कि.मी. कि ऊँचाई तक पाया जाता है।
- वायुमण्डल के निचले भाग में छोटे-छोटे धूलकण होते है, जो समुद्री नमक, बारीक मिट्टी, पराग, धूल व उल्काओं के टूटने से बनते हैं। इन नमक और धूलकणों के चारों ओर जलवाष्प संघनित होकर मेघों का निर्माण करते हैं।
- वायुमण्डल, भिन्न-भिन्न घनत्व और तापमान वाली परतों से निर्मित है। इनके पाँच स्तर- क्षोभ मण्डल, समताप मण्डल, मध्य मण्डल, आयन मण्डल व बहिर्मंडल हैं।
- सूर्य, अन्तरिक्ष में चारों और ऊष्मा का विकिरण करता है, जो सौर विकिरण कहलाता है। सौर विकिरण पृथिवी पर विद्युत और चुम्बकीय होता है जो प्रकाश या उष्मा के रूप में हमें प्राप्त होता है।
- पृथिवी की 'भू-आभ' आकृति के कारण पृथिवी के वायुमण्डल पर सूर्य की किरणें तिरछी पडती हैं, इस कारण सौर ऊर्जा का बहुत कम भाग पृथिवी प्राप्त कर पाती है। सूर्य से पृथिवी को प्राप्त होने वाली इस लघु ऊर्जा को सूर्यातप कहते हैं।
- पृथिवी से सूर्य 4 जुलाई को सर्वाधिक (15 करोड़ 20 लाख किमी.) दूरी पर होता है, इस स्थिति को अपसौर (Aphelion) कहा जाता है। पृथिवी से सूर्य 3 जनवरी को सबसे नजदीक (14 करोड़ 70 लाख कि.मी.) होते हैं, इस स्थिति को उपसौर (Perihelion) कहा जाता है।
- पृथिवी द्वारा सूर्य से ताप ग्रहण कर स्थलीय विकिरण के माध्यम से ऊष्मा को अन्तरिक्ष में छोड़ कर अपने तापमान का सन्तुलन करना पृथिवी का ऊष्मा बजट कहलाता है।

- वायुमण्डल में प्रकाश के प्रकीर्णन के कारण ही उदय और अस्त होते समय सूर्य लाल दिखता है तथा आकाश का रंग नीला दिखाई देता है।
- तापमान किसी पदार्थ या स्थान के गर्म या ठण्डा होने का डिग्री में माप है। तापमान के वितरण को नियन्त्रित करने वाले कारक अक्षांश रेखा, समुद्री तल से उस स्थान की उत्तुङ्गता, समुद्र से दूरी, वायु संहति का परिसञ्चरण, ठण्डी महासागरीय धाराओं की उपस्थिति आदि हैं।
- वायुमण्डल में स्थित वायु के एकांक क्षेत्रफल पर पड़ने वाला भार वायुमण्डलीय दाब कहलाता है। वायुमण्डलीय दाब में भिन्नता का कारण वायु का गर्म होने पर प्रसार तथा ठण्डी होने पर सिकुड़ना है। वायु अधिक दाब वाले क्षेत्रों से न्यून दाब वाले क्षेत्रों में प्रवाहित होती है।
- वायुदाब और तापमान में विपरीत सम्बन्ध होता है। वायुमण्डलीय दाब को मापने की इकाई मिलीबार तथा इसके मापक यन्त्र को बैरोमीटर कहते हैं।
- वायुमण्डल के निचले भाग में वायुदाब ऊंचाई के साथ तीव्रता से घटता है। प्रत्येक 10 मीटर की ऊंचाई पर 1 मिलीबार वायुदाब कम होता है, किन्तु वायुदाब के घटने की दर समान नहीं होती है।
- वायुमण्डलीय दाब में भिन्नता के कारण क्षैतिज रूप से गतिशील वायु, पवन कहलाती है। सामान्यतः इन पवनों का प्रवाह उच्च दाब से निम्न दाब की ओर होता है।
- घर्षण बल का प्रभाव धरातल पर 1 से 3 कि.मी. की ऊँचाई तक अधिक होता है। यह भी पवनों की गति को प्रभावित करता है। पृथिवी के घूर्णन द्वारा लगने वाला बल कोरियालिस बल कहलाता है।
- कोरियालिस बल के कारण पवनें उत्तरी गोलार्ध में मूल दिशा से दायीं ओर तथा दक्षिणी गोलार्ध में बाँई ओर विक्षेपित हो जाती है। निम्न दाब क्षेत्र के चारों ओर पवनों का सञ्चरण चक्रवाती परिसञ्चरण तथा उच्च वायुदाब क्षेत्र में प्रतिचक्रवाती सञ्चरण कहा जाता है।
- मौसम के अनुसार अपनी दिशाओं में परिवर्तन कर देने वाली पवनों को जो मौसमी पवनें कहा जाता है। स्थान विशेष में चलने वाली पवनों को स्थानीय पवन कहते हैं। मानसूनी हवाएँ, स्थल, समुद्री, पर्वतीय तथा घाटी क्षेत्रों में बहने वाली स्थानीय पवनें भी मौसमी पवनें ही हैं।
- वायु, जिसमें तापमान तथा आर्द्रता सम्बन्धी विशिष्ट गुण हो, वायुराशि कहलाती है। उष्णकटिबन्धीय वायु राशियाँ गर्म व ध्रुवीय वायु राशियाँ ठण्डी होती हैं।
- प्रमुख वायु राशियाँ- उष्णकटिबन्धीय महासागरीय वायुराशि, उष्णकटिबन्धीय महाद्वीपीय वायुराशि, ध्रुवीय महासागरीय वायुराशि, ध्रुवीय महाद्वीपीय वायुराशि, महाद्वीपीय आर्कटिक हैं।
- जब दो भिन्न प्रकार की वायु राशियाँ मिलती है, तो इनके मध्य सीमा क्षेत्र को वाताग्र कहा जाता है।

- निम्न वायुमण्डलीय दाब के चारों ओर गर्म हवाएं बाहर से अन्दर की ओर की चक्कर काटती हुई चलने वाली तेज हवाओं को चक्रवात कहते हैं। वायुमण्डल में स्थित उच्च दाब क्षेत्र से संबद्ध पवन प्रवाह प्रणाली को प्रतिचक्रवात कहते हैं।
- वायुमण्डल में वाष्प के रूप में स्थित जल को जलवाष्प तथा हवा में इसकी उपस्थित को आर्द्रता कहते हैं। वायुमण्डल में जलवाष्प की वास्तविक मात्रा को निरपेक्ष आर्द्रता तथा वायुमण्डलीय आर्द्रता के प्रतिशत को सापेक्ष आर्द्रता कहते है।
- ताप के कारण जल का द्रव से गैसीय अवस्था में परिवर्तित होना वाष्पीकरण कहलाता है। जिस तापमान पर जल का वाष्पन शुरू होता है, वह वाष्पीकरण की गुप्त उष्मा कहलाती है। जलवाष्प का जल के रूप में परिवर्तित होना संघनन कहलाता है। संघनन का कारण तापमान में गिरावट है। जब कोई पदार्थ अपनी ठोस अवस्था से सीधे वाष्प में परिवर्तित हो जाता है, उर्ध्वपातन कहलाता है।
- जब वायु की आर्द्रता धरातल पर स्थित ठोस वस्तु; जैसे-पत्थर, घास तथा पौधों की पत्तियों पर पानी की बूंदों के रूप में जमा हो जाती है तब इसे ओस कहा जाता है।
- जब संघनन तापमान के जमाव बिन्दु (0° से) से नीचे चला जाता है तब ओस ठण्डी जगहों पर छोटे-छोटे बर्फ के रवों के रूप में जमा हो जाता है, जिसे तुषार कहा जाता है।
- कोहरा (Fog) पृथिवी के धरातल के समीप कम दृश्यता वाला जल और वाष्प युक्त बादल होते हैं। कोहरे व धुएँ के सम्मिलित रूप को धूम्र कोहरा कहते हैं।
- वायुमण्डल में स्थित जल की बूँदों या बर्फ के कण स्मूहों को बादल कहते हैं। ऊँचाई, घनत्व, विस्तार तथा पारदृश्यता के आधार पर मुख्यत: बादल के चार प्रकार के हैं- 1. पक्षाभ मेघ 2. कपासी मेघ 3. स्तरी मेघ 4. वर्षा मेघ।
- वायुमण्डलीय जलवाष्प जब संघनित होकर ठोस या जल की बूँदों के रूप में धरती पर आता है, तो वर्षण कहलाता है। जलवाष्प जब जल की बूँदों के रूप में धरती पर आती हैं, तो वर्षा कहलाती हैं। हिमांक से नीचे तापमान के समय हिमकणों के रूप में होने वाली वृष्टि को हिमपात कहते हैं। वर्षा को मुख्यतः 3 भागों में बांटा गया है- 1. संवहनीय वर्षा 2. पर्वतीय वर्षा 3. चक्रवातीय वर्षा।

अध्याय- 4

जल और जलवायु

- पृथिवी के धरातल पर जल की प्रचुर मात्रा है। इसी कारण पृथिवी को 'नीला ग्रह' भी कहा जाता है। पृथिवी का लगभग तीन-चौथाई भाग जल से घिरा है। पृथिवी पर स्थित सम्पूर्ण जल का लगभग 97.25% भाग महासागरों व समुद्रों में अवस्थित है।
- जलीय चक्र का अर्थ एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में जल का निरन्तर सागरों, महासागरों, वायुमण्डल और धरातल तक पहुँचना है। जलीय चक्र पृथिवी के जलमण्डल में विभिन्न रूपों- गैस, तरल और ठोस अवस्था में जल का परिसञ्चरण है।
- पृथिवी पर विस्तृत जलराशि के समूह को महासागर कहा जाता है। पृथिवी के कुल क्षेत्रफल के लगभग दो-तिहाई भाग पर महासागर हैं। पृथिवी पर कुल पाँच महासागर हैं- प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक और अन्टार्कटिक महासागर।
- महासागरों की अपेक्षा छोटी जलराशि को सागर कहते हैं। ये महासागरों से जुड़े हुए और कम गहरे होते हैं। लाल सागर, दक्षिण चीन सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, अरब सागर आदि हैं।
- सागर और महासागर पृथिवी की बाहरी परत में विशाल गर्तों में स्थित है। महासागरीय अधःस्तल का प्रमुख भाग समुद्र तल के नीचे 3 से 6 किमी. के मध्य मिलता है। महासागरों के सतह पर विशाल पर्वत श्रृंखलाएँ, गहरे गर्त, बड़े मैदान हैं।
- महासागरीय अधःस्तल के मुख्य चार भाग हैं- 1. महाद्वीप का विस्तृत सीमान्त जो उथले सागरों तथा खाड़ियों से घिरा होता है, महाद्वीपीय शेल्फ कहलाता है। 2. महासागरीय बेसिनों तथा शेल्फ को जोड़ने वाले महासागरीय अधस्तल: को महाद्वीपीय ढाल कहते हैं। 3. 3000 से 6000 मीटर के मध्य गहराई वाले महासागरीय बेसिन को गहरे सागरीय मैदान कहते हैं। 4. महासागरों के सबसे गहरे और खड़े किनारों वाले संकीर्ण बेसिन को महासागरीय गर्त कहते हैं।
- उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित महासागरों का तापमान दक्षिणी गोलार्द्ध के महासागरों से अधिक होता है। उत्तरी गोलार्द्ध में औसत तापमान 19° से. तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में 16° से. रहता है।
- समुद्री जल का महत्त्वपूर्ण गुण लवणता है। लवणता का मापन 1000 ग्राम (1kg) जल में घुले हुए नमक की मात्रा से किया जाता है।
- महासागरीय लवणता को प्रभावित करने वाले कारक वाष्पीकरण, वर्षण, वायु, महासागरीय धाराएँ आदि हैं।

- सर्वाधिक लवणता वाले क्षेत्र- टर्की की वॉन झील (330%.), मृत सागर (238%.) और ग्रेट साल्ट झील (220%) है।
- महासागरीय जल निरन्तर गतिमान होता है। इस गतिशीलता का कारण महासागरों की भौतिक विशेषताएँ (तापमान, लवणता, घनत्व) तथा बाह्य बल (वायु, सूर्य, चन्द्रमा) हैं।
- तरङ्गें एक प्रकार से ऊर्जा है, जिनमें जल कण छोटे वृत्ताकार रूप में गति करते हैं। वायु द्वारा महासागरीय जल को प्रदत्त ऊर्जा के कारण उनमें तरङ्गें पैदा होती हैं। जैसे-जैसे तरङ्गें आगे की ओर बढ़ती हैं, बड़ी होती जाती है।
- सूर्य और चन्द्रमा के आकर्षण के कारण महासागरों के जल स्तर का ऊपर उठना तथा गिरना ज्वार-भाटा कहलाता है। जल के ऊपर उठने को ज्वार तथा नीचे गिरने को भाटा कहा जाता है। अपकेन्द्रीय बल, ज्वार भाटे की उत्पत्ति में सहायक होता है।
- महासागरों में निश्चित मार्ग व दिशा में एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जल के नियमित प्रवाह को महासागरीय धाराएँ कहा जाता है। महासागरीय धाराओं के प्रवाह को नॉट में मापा जाता है।
- पृथ्वी की घूर्णन गति से उत्पन्न अपकेन्द्रीय बल को कोरियालिस बल कहते हैं। इसके कारण उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलने वाली पवनों की दिशा में विक्षेप उत्पन्न हो जाता है। परिणामत: उत्तरी गोलार्द्ध में पवन दायीं ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बायीं ओर मुड़ जाती हैं। इस परिवर्तनकारी बल की खोज कॉरिऑलिस नामक विद्वान ने की थी।
- पृथिवी के किसी वृहत् प्रदेश के वायुमण्डल के लम्बे समय की सामान्य स्थिति को जलवायु कहते हैं। पृथिवी के अलग-अलग अक्षांशों पर ताप की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। इसी भिन्नता के आधार पृथिवी का जलवायुयिक विभाजन किया जाता है।
- किसी विशेष स्थान पर विशेष समय में वायुमण्डल की विशिष्ट स्थिति को मौसम (Weather) कहते हैं। ताप, दाब, वायु, आर्द्रता, बादल और वर्षा आदि मौसम और जलवायु के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं।
- जलवायु के वर्गीकरण में वी. कोपेन की आनुभविक पद्धति (1918 ई.) का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है। बाद में इसमें संशोधन किए जाते रहे। जलवायु वर्गीकरण के लिए कोपेन ने तापमान तथा वर्षण के कुछ निश्चित मानों का चयन करते हुए उनका वनस्पति के वितरण से सम्बन्ध स्थापित किया।
- कोपेन द्वारा पाँच जलवायु समूह A, B, C, D और E तैयार किए गए, जिनमें से चार तापमान व एक वर्षण पर आधारित है। इन पाँच समूहों में से समूह A, C, D व E आर्द्र जलवायु को तथा समूह B शुष्क जलवायु को बताता है।

- यूरोप कई बार उष्ण, आर्द्र, शीत एवं शुष्क युगों से गुजरा है। यूरोप ने सन् 1550-1850 की अवधि में लघु हिमयुग का अनुभव किया।
- सन् 1885 से 1940 तक वैश्विक तापमान में वृधि देखी गई। सन् 1930 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका के बृहत मैदान के दक्षिण-पश्चिमी भाग (धूल का कटोरा) में भयंकर सूखा पड़ा। सन् 1940 के बाद तापमान में कमी आई।
- सन् 1940 के बाद तापमान में कमी आई। सन् 1990 का दशक सदी का सबसे गर्म दशक रहा तथा विश्व भयंकर बाढ़ों से त्रस्त रहा। सन् 1998 बीसवीं शताब्दी/सहस्राब्दी का सबसे गर्म वर्ष था।
- प्रमुख ग्रीन हाउस गैसें कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड व ओजोन हैं। ये गैसें वायुमण्डल की ऊपरी परत में फैल जाती हैं।
- सूर्य की किरणें जो पृथिवी से परावर्तित होती हैं, वातावरण से बाहर नहीं जा पाती व पुनः पृथिवी पर लौट आती हैं, जिससे पृथिवी की सतह का तापमान बढ़ जाता है, इसे ही ग्रीन हाउस प्रभाव या हरित गृह प्रभाव कहा जाता है।
- वर्ष 2005 में प्रभावी हुई क्योटो उद्घोषणा का 141 देशों ने अनुमोदन किया है। क्योटो प्रोटोकाल के अन्तर्गत सुनिश्चित किया गया कि 35 औद्योगिक राष्ट्र वर्ष 1990 के ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन स्तर में 2012 तक 5 प्रतिशत की कमी लाएँगे।
- **जलवायु परिवर्तन के** प्राकृतिक कारण- 1. ज्वालामुखी विस्फोट 2. समुद्री तूफान 3. बाढ़ 4. भूस्खलन 5. महाद्वीपीय संवहन आदि।
- **जलवायु परिवर्तन के** मानवीय कारण- 1. औद्योगिकरण 2. वनों की कटाई 3. खनन 4. शहरीकरण 5. जनसङ्ख्या वृद्धि 6. परिवहन के साधन आदि।

अध्याय-5

पृथिवी पर जैवमण्डल

- पृथिवी की उत्पत्ति का अन्तिम चरण जीवन की उत्पत्ति व विकास से सम्बन्धित माना जाता है। जीवन का विकास स्थल, जल एवं वायु मण्डलों में हुआ है। इन सभी भागों में जीवों के निवास स्थलों को मिलाकर जैवमण्डल कहते हैं।
- समस्त जीवधारी मिलकर पृथिवी पर जैवमण्डल (Biosphere) का निर्माण करते हैं। इसमें जीवित घटक शामिल हैं जो अन्य प्राकृतिक कारकों- भूमि, जल, मिट्टी, तापमान, वर्षा, आर्द्रता और सूर्य के प्रकाश के साथ पारस्परिक क्रिया कर जीवों के जीवित रहने, वृधि और विकास में सहायक होते हैं।
- पारिस्थितिकी को अंग्रेजी भाषा में Ecology कहते हैं। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जर्मन वैज्ञानिक ई. हैक्किल ने किया। यह ग्रीक भाषा के दो शब्दों ओइकोस (Oikos) और लॉजी (Logy) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ घर का अध्ययन है।
- पर्यावरण में जीवों, पौधों, प्राणियों (मानव जाति) व अन्य प्राणियों के मध्य सम्बन्ध को पारिस्थितिक सन्तुलन कहा जाता है। भिन्न- भिन्न पौधे व जीव-जंतु का विकासक्रम द्वारा किसी पर्यावरण का अभ्यस्त हो जाना पारिस्थितिक अनुकूलन कहलाता है।
- किसी विशेष भाग में विशेष समूह के जीवों का अजैविक तत्वों से अन्तर्क्रिया होती हैं जिसमें ऊर्जा प्रवाह व पोषण श्रृंखलाएँ स्पष्ट रूप से समायोजित हों, पारितन्त्र कहलाता है।
- पारितन्त्र दो प्रकार का होता है - स्थलीय और जलीय पारितन्त्र। वन, घास, मरुस्थल और टुन्ड्रा विश्व के प्रमुख स्थलीय पारितन्त्र हैं। जलीय पारितन्त्र में महासागर, सागर, ज्वारनदमुख, प्रवाल भित्ति, झीलें, नदियाँ, कच्छ और दलदल शामिल हैं।
- पारितन्त्र में वनस्पतियों और जीवों के अन्तर्सम्बन्धित समूह जो एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र में पाये जाते हैं, बायोम कहलाते हैं।
- बायोम को 5 भागों में बांटा गया है- 1. वन बायोम 2. घास भूमि बायोम 3. मरुस्थलीय बायोम 4. जलीय बायोम 5. उच्च प्रदेशीय बायोम।
- जीवमण्डल में प्राणियों व वातावरण के बीच रासायनिक पदार्थों के आदान-प्रदान की चक्रीय गति को जैव भू-रासायनिक चक्र कहा जाता है।
- जलचक्र से आशय, जल का निरन्तर समुद्र, वायुमण्डल व भूमि के मध्य निरन्तर चक्रित होते रहना है। इसके प्रमुख घटक भाप, स्वेद, संघनन, अवक्षेपण, जल प्रवाह, रिसाव हैं।

- प्रकाश संश्लेषण क्रिया का सहायक परिणाम ऑक्सीजन हैं। जल अणुओं के विघटन से भी ऑक्सीजन पैदा होती है। पौधों के वाष्पोत्सर्जन द्वारा यह वायुमण्डल में पहुँचती है। इसका उपयोग जीवों (मनुष्य एवं जानवरों) के जीवन का आधार है।
- नाइट्रोजन (79%) हमारे वायुमण्डल का प्रमुख घटक है। नाइट्रोजन जैविक स्थिरीकरण के द्वारा मिट्टी में पहुँचता है। मिट्टी से पौधों फिर जंतुओं में और अंत में पौधों तथा जंतुओं के मृत्यु के पश्चात वायुमण्डल में मुक्त हो जाता है। यह सम्पूर्ण क्रिया नाइट्रोजन चक्र कहलाता है।
- कार्बन का जैव-भूरासायनिक चक्र द्वारा जीवमण्डल, मृदामण्डल, भूमण्डल, जलमण्डल और पृथिवी के वायुमण्डल के साथ विनिमय होता है। यह पृथिवी पर जीवमण्डल तथा उसके समस्त जीवों के साथ कार्बन के पुनर्नवीनीकरण और पुन: उपयोग की अनुमति करता है।
- किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों की सङ्ख्या और उनकी विविधता को जैव-विविधता कहते हैं। जैव-विविधता पृथिवी पर सजीव सम्पदा है।
- जैव विविधता को 3 वर्गों में विभाजित किया गया है- 1. आनुवांशिक जैव विविधता, 2. प्रजातीय जैव-विविधता, 3. पारितन्त्रीय जैव विविधता।
- महा विविधता केन्द्र में सम्मिलित 12 देश- मैक्सिको, कोलम्बिया, इक्वेडोर, पेरू, ब्राजील, कांगो, मेडागास्कर, चीन, भारत, मलेशिया, इण्डोनेशिया और आस्ट्रेलिया हैं।
- जैव विविधता में ह्रास के अनेक कारण हैं, जैसे- वन्य जीवों का शिकार, वनोन्मूलन, अति-चराई, जीवों के आवासों का विनाश, पर्यावरण प्रदूषण, आवास विखण्डन, विदेशी मूल की वनस्पतियाँ, बीमारियाँ, चिड़ियाघर व शोध हेतु जीवों का उपयोग, भूकम्प, अकाल, ज्वालामुखी, बाढ़ आदि।
- जैव-विविधता के ह्रास के परिणामस्वरूप जीव-जन्तुओं को तीन श्रेणियों सकंटापन्न प्रजातियाँ, सुभेद्य प्रजातियाँ तथा दुर्लभ प्रजातियाँ में विभाजित किया गया है।
- रियो-डी-जेनेरियो (ब्राजील) में 1992 में आयोजित भारत समेत 155 देशों के सम्मेलन में जैव-विविधता के संरक्षण के लिये एक संकल्प पत्र पारित किया गया था।
- भारत सरकार द्वारा भी प्रजातियों को बचाने, संरक्षित करने व उनका विस्तार करने के उद्देश्य से 'वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम', 1972 पारित किया गया। 22 मई को प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस मनाया जाता है।
- इण्टरनेशनल यूनियन फॉर द कन्जरवेशन एण्ड नेचुरल रिसोर्सेज (IUCN) संकटग्रस्त प्रजातियों रेड सूची प्रकाशित करती है।

अध्याय-6

प्राकृतिक संकट और आपदाएँ

- प्राकृतिक संकट से आशय प्राकृतिक पर्यावरण में अचानक होने वाले उन तीव्र परिवर्तनों से है, जिनका जीवन तथा मानवीय क्रिया-कलापों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।
- ज्वालामुखी उद्गार, भूकम्प, बाढ़, हिमपात, ओलावृष्टि, चक्रवात, विभिन्न महामारियाँ आदि प्राकृतिक संकट के अन्तर्गत आती है। इनके कारण बड़ी मात्रा में जन-धन की हानि होती है।
- आपदा से आशय अनपेक्षित और अप्रत्याशित प्रकोपों से हैं। आपदा, प्राकृतिक या मानव जनित होती है। इनके कारण सभी जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों की अपार क्षति होती है। आपदा को मुख्यत: दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- 1. मानव जनित आपदा 2. प्राकृतिक आपदा।
- मानव जनित आपदाओं का सम्बन्ध मानवीय क्रियाकलापों से होता है, जैसे- आग लगना, विविध प्रकार की दुर्घटनाएँ, आतंकी गतिविधियाँ, युद्ध, ओजोन परत क्षरण, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि) आदि। भारत में औद्योगिक आपदा के रूप में भोपाल गैस त्रासदी (सन् 1984) ऐसी ही मानव जनित आपदा का उदाहरण है।
- पर्यावरणीय असन्तुलन और पृथिवी की आन्तरिक हलचल का अचानक भयानक रूप ले लेना प्राकृतिक आपदा कहलाता है। सुनामी, बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी, चक्रवात, हिमस्खलन, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं।
- भारत बृहद् आकार वाला प्राकृतिक पर्यावरणीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। लम्बे काल तक उपनिवेशन तथा अधिक जनसंख्या के कारण यहाँ का विशाल भू-भाग प्राकृतिक आपदाओं की दृष्टि से सुभेद्य है। यहाँ आने वाली प्रमुख प्राकृतिक आपदाएँ भूकम्प, सुनामी, बाढ़, सूखा और भूस्खलन है।
- पृथिवी की सतह में कम्पन को भूकम्प कहते हैं। कम्प पृथिवी के स्थलमण्डल में ऊर्जा के अचानक मुक्त हो जाने के कारण उत्पन्न होने वाली तरङ्गों के कारण आता है। ये इतने शक्तिशाली होते हैं कि कुछ ही क्षणों में पूरे नगर को ध्वस्त कर सकते हैं।
- जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, पश्चिम बङ्गाल का दार्जिलिंग उपमण्डल तथा उत्तर-पूर्व के सात राज्य (असम, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा) भूकम्प से सर्वाधिक प्रभावित रहते हैं।
- भूकम्प के कारण ही अनेक प्रकार के द्वीपों एवं महाद्वीपों का निर्माण होता है।

- भूकम्प सम्भावित क्षेत्रों में विशाल भवन, बड़े औद्योगिक संस्थान और शहरीकरण को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। भूकम्प सुभेद्य क्षेत्रों में हल्की निर्माण सामग्री का प्रयोग करना चहिए।
- भूकम्प और ज्वालामुखी से महासागरीय धरातल में अचानक हलचल होने के कारण महासागरीय जल में अचानक विस्थापन होता है। परिणामस्वरूप सागरों एवं माहासागरों में ऊर्ध्वाधर तरङ्गें उत्पन्न होती हैं, जिन्हें सुनामी या भूकम्पीय समुद्री लहरें कहा जाता है।
- सामान्यत: सुनामी प्रशन्त महासगरीय तटों, अलास्का, जापान, फिलिपाइन, दक्षिण पूर्व एशिया के द्वीप और मलेशिया में तथा हिन्द महासागर में म्याम्यार, श्रीलंका और भारत के तटीय क्षेत्रों में आती हैं। इससे इन महासागारों के तटीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से जन-धन की हानि होती है।
- 26 दिसम्बर, 2004 को इण्डोनेशिया में 8.9 तीव्रता वाला भूकम्प आया जिसके बाद समुद्र के भीतर उठी सुनामी ने भारत समेत अनेक देशों में भारी तबाही हुई। इसके कारण लगभग 3 लाख लोगों की मृत्यु हुई और भारी आर्थिक क्षति विश्व के अनेक देशों को उठाना पड़ा।
- कम वायुमण्डलीय दाब के चारों ओर गर्म हवाओं की तेज आंधी को चक्रवात कहते हैं। इनका क्षेत्र 30^0 उत्तरी और दक्षिणी अक्षांश है। चक्रवात का मुख्य कारण निरन्तर पर्याप्त मात्रा उष्ण और आर्द्र वायु, तीव्र कोरियालिस बल, क्षोभ मण्डल में अस्थिरता, मजबूत ऊर्ध्वाधर वायु फान की अनुपस्थिति है।
- नदियों या जलाशयों में अस्थायी अति जल प्रवाह होने के कारण आस-पास के भू-क्षेत्रों का अस्थायी रूप से जलमग्न होना बाढ़ कहलाता है। विश्व के विस्तृत भूभाग में बाढ़ के कारण फसलें नष्ट हो जाती है एवं भारी जनहानि होती है।
- भारत में बाढ़ नियन्त्रण के लिये सन् 1954 ई. में राष्ट्रीय बाढ़ नियन्त्रण कार्यक्रम (NFCP) प्रारम्भ किया गया। 1976 ई. में कृषि और सिंचाई मन्त्रालय के अन्तर्गत राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की स्थापना की थी।
- लम्बे समय तक अवर्षण, जल का अत्यधिक वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन, और जलाशयों तथा भूमिगत जल की कमी होना सूखा कहलाता है। यह महिनों तक या वर्षों तक रह सकता है।
- सूखे की समस्या से निपटने और नदियों को सदानीरा बनाये रखने के लिए भारत सरकार द्वारा 2019 ई. में जल शक्ति मन्त्रालय का गठन किया गया।
- मिट्टी, चट्टानों और वनस्पतियों का समूह ढाल प्रवणता या पृथिवी की गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से पर नीचे की ओर खिसकना, भू-स्खलन कहलाता है। भू-स्खलन की घटनाएँ प्राय: पहाड़ी क्षेत्रों में होती हैं।
- आपदा प्रबन्धन अधिनियम-2005 में आपदा को प्राकृतिक या मानवकृत महाविपत्ति, संकट अथवा गम्भीर घटना के रूप में परिभाषित किया गया है।

अध्याय- 7

प्रारम्भिक समाज

(360 लाख वर्ष से प्रथम ई. पू. वर्ष तक)

- मानव विज्ञानियों का मानना है कि आज से लगभग 56 लाख वर्ष पूर्व पृथिवी पर ऐसे प्राणियों का प्रादुर्भाव हुआ था, जिन्हें हम मानव कह सकते हैं लेकिन कालान्तर में ये लुप्त हो गए थे।
- आधुनिक मानव की उत्पत्ति लगभग 1,60,000 वर्ष पूर्व हुई थी। आधुनिक मानव के उत्पत्ति काल से लेकर लगभग 8000 ई.पू. तक मानव विकास का इतिहास अनेक उतार-चढ़ावों से भरा रहा है।
- लाखों-करोडों वर्षों पूर्व जो जीव-जन्तु एवं पेड़-पौधे भूमि में दब गए, उनके अवशेष या चिन्ह जो खुदाई के दौरान पाये जाते हैं, उन्हें जीवाश्म कहा जाता है। एक ही समूह के नर और मादा के प्रजनन से प्राप्त सन्तति 'प्रजाति' कहलाती है।
- मानव की उत्पत्ति के सन्दर्भ में यदि बात की जाए तो पता चलता है कि एशिया तथा अफ्रीका में स्तनपायी प्राणियों की प्राइमेट नामक श्रेणी का उद्भव सर्वप्रथम हुआ।
- लगभग 240 लाख वर्ष पूर्व प्राइमेट श्रेणी में एक उप-समूह उत्पन्न हुआ, जिसे होमिनॉइड कहा गया था। इस उप-समूह में 'वानर' यानि 'एप' शामिल थे और लगभग 56 लाख वर्ष पूर्व हमें प्राणियों के अस्तित्व के प्रमाण मिले थे।
- वैज्ञानिकों ने होमो को कई प्रजातियों में बाँटा है और इन प्रजातियों को उनकी विशेषताओं के अनुसार अलग-अलग नाम दिए हैं, जैसे - होमो हैबिलिस (औजार बनाने वाले), होमो एरेक्टस (सीधे खड़े होकर पैरो के बल चलने वाले) और होमो सैपियंस (प्राज्ञ या चिन्तनशील मानव)।
- होमो हैबिलिस के जीवाश्म इथोपिया में ओमो और तंजानिया में ओल्डुवई गोर्ज से मिले है। होमो एरेक्टस के जीवाश्म एशिया और अफ्रीका दोनों महाद्वीपों से प्राप्त हुए हैं। होमो सैपियंस के जीवाश्म यूरोप व अफ्रीका महाद्वीप से प्राप्त हुए हैं।
- स्तनधारी प्राणियों के विशाल समूह का एक उपसमूह प्राइमेट कहलाता है। इस समूह के सदस्यों के शरीर में बाल होते हैं, जैसे- मानव, वानर आदि। बन्दरों से विशाल शरीर वाले और भिन्नता रखने वाले जीवों को होमोनॉइड कहा जाता था।
- क्षेत्रीय निरन्तरता मॉडल के अनुसार, भिन्न-भिन्न प्रदेशों में रहने वाले होमो सैपियंस का आधुनिक मानव के रूप में विकास धीरे-धीरे हुआ था।

- प्रतिस्थापन मॉडल के अनुसार मानव के सभी पुराने रूप, चाहे वे कही भी थे, बदल गए और उनका स्थान पूरी तरह आधुनिक मानव ने ले लिया था।
- वैदिक संस्कृति के अनुसार मानव का निर्माण ईश्वर द्वारा विचार पूर्वक योजनाबद्ध रीति से किया गया है, जो ईश्वर निर्मित होने के कारण सुर (देवता) कहलाये। वे मानव सुन्दर, सुदृढ, सर्वगुण सम्पन्न, बुद्धिमान और कार्य कुशल थे।
- संग्रहण का सामान्य अर्थ होता है, इकट्ठा करना। आदिमानव विभिन्न स्त्रोतों, जैसे- फल, बीज, गुठलियां, कंदमूल आदि को अपने भोजन हेतु इकट्ठा करता था।
- आदिमानव शिकार द्वारा भी अपना भोजन प्राप्त करता था। वह जानवरों को मारकर या किसी कारणवश मरे जानवरों के माँस को खुरचकर खाने लगा था। मछली पकड़ना भोजन प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण तरीका था। अपमार्जन से आशय है त्यागी हुई या छोड़ी गई वस्तुओं की सफाई करना है।
- प्रारम्भिक मानव के विकास के प्रथम काल को पाषाणकाल कहा जाता है, इस काल में मानव अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को पत्थर से बनाता था।
- आग की खोज से मानव जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए थे। पत्थर के बाद उसने ताँबे के औजारों का निर्माण किया। संभवतः आदिमानव द्वारा खोजी गई प्रथम धातु ताँबा ही था।
- अपने पेट पालन व जंगली जानवरों से सुरक्षा हेतु आदिमानव समूह में रहने लगे। मानव का यही सामूहिक सुरक्षा का स्वभाव परिवार तथा समाज के रूप में देखने को मिला। अब मानव ने पत्थरों को काटकर गुफाओं में रहना शुरू किया।
- मध्यप्रदेश में भीमबेटका नामक जगह पर गुफाओं की खोज 1977 ई. में पहली बार की गई थी। यहाँ सात पहाड़ियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जहाँ लगभग 500 गुफाएँ या शैल आश्रय हैं।
- प्रारम्भिक मानव पत्थरों, लकड़ी, जानवरों की हड्डियों व सींगों से अपने औजारों का निर्माण करता था। पत्थरों के औजार अधिकत्तर चकमक पत्थरों से बनाये जाते थे। इन औजारों में हथौड़े, कुल्हाड़ियाँ, हशियाँ, भाला वसूले आदि प्रमुख थे।
- लगभग 35000 वर्ष पूर्व वन्य जीवों के शिकार की विधियों में परिवर्तन होने लगा था। अब फेंक कर चलाने वाले भालों और तीर कमान जैसे नए प्रकार के औजार बनाए जाने लगे थे।
- होमिनिड भाषा में अङ्ग विक्षेप अर्थात् हाव-भाव या हाथों का सञ्चालन शामिल था तो, उच्चरित भाषा से पूर्व गाने या गुनगुनाने जैसे मौखिक या अशाब्दिक सञ्चार का प्रयोग होता था। भाषा व कला के विकास के कारण अब मानव बस्तियों में रहने लगा था। पश्चात धीरे-धीरे नगरों में विकास होने लगा था।
- मेसोपोटामिया अपनी सम्पन्नता, विशाल और समृद्ध साहित्य, शहरी जीवन, खगोल विद्या आदि के लिए प्रसिद्ध था। वर्तमान इराक गणराज्य का यह भाग दजला और फरात नदियों के मध्य स्थित होने के कारण बहुत ऊपजाऊ क्षेत्र है।

- मेसोपोटामिया में 7000 से 6000 ई.पू. के मध्य कृषि कार्य प्रारम्भ हो चुका था। पशुपालन से यहाँ के निवासी दूध, ऊन व मांस की प्राप्ति करते थे। नगरीय जीवन का प्रारम्भ मेसोपोटामिया से माना जाता है। यहाँ पुरातत्वीय खोजों का प्रारम्भ 1840 ई. के दशक में हुआ था।
- मानव विज्ञान को अंग्रेजी में एन्थ्रोपोलॉजी कहा जाता है। यह ऐसा विषय है जिसमें मानव संस्कृति और मानव जीव विज्ञान के उद्विकास का अध्ययन किया जाता है।
- मेसोपोटामिया से जो प्रारम्भिक पट्टिकाएँ प्राप्त हुई हैं, उनका समय लगभग 3200 ई.पू. का है। यहाँ के निवासी लेखन के लिए मिट्टी से निर्मित पट्टिकाओं का प्रयोग करते थे। बैलों, मछलियों और रोटियों आदि की लगभग 500 सूचियां मेसोपोटामिया से प्राप्त हुई हैं।
- मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी ज्ञात भाषा सुमेरियन थी। 2400 ई. पू. के पश्चात अक्कदी भाषा प्रचलित हुई थी। लेखन कार्य का प्रारम्भ समाज के लोगों के स्थायी हिसाब-किताब रखने से हुआ था।
- कीलाकार लिपि में चिकनी मिट्टी की गीली पट्टीका पर दोनों ओर कीलनुमा सरकंडों आदि से लेखन कार्य किया जाता था। कीलाक्षर लिपि को 1850 ई. में पढ़ा गया था।
- मेसोपोटामिया में एक सुन्दर नगर 'उरुक' था। वहाँ के प्रसिद्ध शासक एनमर्कर का वर्णन एक सुमेरियन महाकाव्य में मिलता है।
- एनमर्कर ने अपने हाथ से चिकनी मिट्टी की पट्टिका बनाई और उस पर अपनी बात लिखी थी। मेसोपोटामिया में यहीं से लेखन कला का आरम्भ कीलाकार लिपि के रूप में माना जाता है।
- वर्तमान में वर्ष का 12 माह में, महिना का चार हफ्तों में, एक दिन का 24 घण्टे में तथा एक घण्टे का 60 मिनट में विभाजन आदि हमें मेसोपोटामियाँ से प्राप्त हुआ है। समय का यह विभाजन सिकन्दर के उत्तराधिकारियों से रोम तथा इस्लामिक देशों से होता हुआ यूरोप पहुँचा।
- दक्षिणी मेसोपोटामिया में बस्तियों का विकास लगभग 5000 ई पू. से होने लगा था। मेसोपोटामिया की सभ्यता की खुदाई में एक देवालय मिला है, जो कच्ची ईटों से बना था। उस समय मन्दिरों में विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। उपरोक्त तथ्यों से प्रकट होता है कि मेसोपोटामिया की सभ्यता प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अङ्ग थी।

अध्याय- 8

विश्व के प्रमुख साम्राज्य (100 ई.-1300 ई.तक)

- परवर्ती काल, रोम साम्राज्य के उद्भव, चौथी से सातवीं शताब्दी तक पल्लवित हुई थी। उस समय यहाँ के निवासी बहुदेववादी थे। प्रमुख देवी-देवताओं में जूनों, जूपिटर, मिनर्वा, मॉर्स आदि थे।
- रोमन सम्राट कॉन्स्टैनटाइन द्वारा ईसाई धर्म को रोम का राज धर्म बनाना और सातवीं सदी में अरब में इस्लाम का उदय था, जो बाद में रोम साम्राज्य का पतन का कारण बना था।
- 600 ई. से 1200 ई. के मध्य तक मिश्र से अफगानिस्तान तक का विशाल क्षेत्र इस्लामी सभ्यता का मूल क्षेत्र था। इस्लाम के उदय से पूर्व अरेबियन समाज कई कबीलों में बँट हुए थे। इन कबीलों में बहुदेववाद और मूर्तिपुजा का प्रचलन था।
- 612 ई. में पैगम्बर मुहम्मद ने अपने आप को खुदा (ईश्वर) का संदेशवाहक घोषित किया था। मुहम्मद साहब के धर्म- सिद्धान्त को स्वीकार करने वाले अनुयायियों को मुसलमान (मुस्लिम) कहा जाता था।
- 622 ई. में समृद्ध लोगों के विरोध के कारण मोहम्मद को अपने अनुयायियों के साथ मक्का छोड़कर मदीना जाना पड़ा था, इस घटना को हिजरत कहा जाता है।
- 632 ईस्वी में पैगम्बर मुहम्मद के निधन के पश्चात इस्लाम का अगला पैगम्बर कोई नहीं हुआ था। परिणामस्वरुप मुसलमानों में गहरे मतभेद पैदा हो गए थे। मतभेदों को को दूर करने के लिए खिलाफत नामक संस्था का निर्माण हुआ जिसके नेता को पैगम्बर का प्रतिनिधि (खलीफा) कहा जाता था।
- 750 ई. दवा नामक आन्दोलन के कारण उमय्यद वंश का स्थान पर मक्का निवासी अब्बासियों ने सत्ता पर अपना अधिकार कर लिया था। बगदाद को इन्होंने अपनी राजधानी बनाया था।
- अब्बासी साम्राज्य नौंवी सदी तक आते-आते कमजोर हो गया था। इसका सबसे बड़ा कारण दूरस्थ प्रान्तों पर बगदाद का नियन्त्रण कम होना था।
- 10 वीं-11 वीं सदी में तुर्की सल्तनत के उदय से अरबों और ईरानियों के साथ एक तीसरा प्रजातीय समूह जुड़ गया था। तुर्क लोग, तुर्किस्तान के मध्य एशियाई घास के मैदानों के खानाबदोश कबायली लोग थे, जिन्होंने धीरे-धीरे इस्लाम धर्म को अपना लिया था।
- 1095 ई. से 1291 ई. के मध्य यूरोपीय ईसाइयों ने मुस्लिम नगरों के खिलाफ युद्धों की योजना बनाई और इन युद्धों को धर्मयुद्ध नाम दिया गया था। इस काल में तीन धर्मयुद्ध हुए थे।
- पहला धर्मयुद्ध (1098 ई.-1099 ई.) में फ्रान्स और इटली की सेना ने मुसलमानों व यहूदियों की विद्वेषपूर्ण हत्याएँ की और जेरुसलम पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।

- दूसरा धर्मयुद्ध (1145ई.-1149 ई.) में जर्मन और फ्रान्सिसी सेना ने दमिश्क पर अधिकार करने का असफल प्रयास किया था। इसी युद्ध के दौरान जेरुसलम पर पुनः मुस्लिमों ने अधिकार कर लिया था।
- तीसरा धर्मयुद्ध (1189 ई.-1291 ई.) में मिस्र के मामुलक शासकों ने सभी ईसाइयों को फिलिस्तीन से बाहर खदेड़ दिया था।
- अरबवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। जमीन के मालिक बड़े और छोटे किसान होते थे। कृषि भूमि का सर्वोपरी नियन्त्रण राज्य के हाथों में था। राज्य की अधिकांश आय का स्त्रोत भू- राजस्व था।
- पाँच शताब्दियों तक अरब और ईरानी व्यापारियों का चीन, भारत और यूरोप के मध्य के समुद्री व्यापार पर एकाधिकार था। इसके लिए दो मुख्य रास्ते लाल सागर और फारस की खाड़ी थे।
- मसालों, कपडों, चीनी मिट्टी की वस्तुओं, बारूद आदि (भारत व चीन से) को अदन व एधाब (लाल सागर के पत्तन) तथा सिराफ व बसरा (फारस की खाड़ी के पत्तन) नामक पत्तनों तक जहाजों से लाया जाता था।
- मुहम्मद की प्रामाणिक उक्तियों और कार्यों को लेखबद्ध करने का कार्य करते थे, उन्हें 'उलेमा' कहा जाता था। आठवीं-नौवीं सदी आते-आते इस्लामिक कानून की चार शाखाएँ बन गई थी- मलिकी, हनफी, शफिई और हनबली।
- यह ईश्वर और उसकी सृष्टि के एक होने का विचार है, जिसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य की आत्मा को उसके निर्माता यानी परमात्मा के साथ मिलाना चाहिए। ईश्वर से मिलन, ईश्वर के साथ प्रेम के माध्यम से ही किया जा सकता है।
- फनी पार्क्स ने लिखा है कि 'काबा की दीवार में जो काला पत्थर (संगे अस्वद) है, वह शिव लिंग है। पूर्व यह किसी मन्दिर में स्थापित था'।
- यायावर लोग मूलरूप से घुमक्कड या खानाबदोश होते थे। इस साम्राज्य की स्थापना मध्य एशिया के मंगोलों ने चंगेज खान के नेतृत्त्व में 13वीं-14वीं सदी में पार महाद्वीपीय साम्राज्य के रूप में की थी।
- चंगेज खान के पोते मोन्के ने फ्रान्स के शासक लुई नौंवे को चेतावनी देते हुए कहा था कि 'पृथिवी का केवल एक ही अधिपति है और वो है चंगेज खान'।
- चंगेज खान का जन्म आधुनिक मंगोलिया के उत्तरी भाग में ओनोन नदी के निकट 1162 ई. में हुआ। इसके बचपन का नाम तेमुजिन था। इसके पिता येसुजेई, जो कियात कबीले के मुखिया थे। आजीवन युद्धों में व्यस्त रहने वाले चंगेज खान की मृत्यु 1227 ई. में हुई थी।
- 13वीं सदी में चीन, ईरान और पूर्वी यूरोप के लोग मंगोलों को भय और घृणा की दृष्टि से देखते थे। फिर भी शक्तिशाली शासक के रूप में चंगेज खान ने मंगोलों को एकता के सूत्र में पिरोया और एक समृद्ध पारमहाद्वीपीय साम्राज्य की स्थापना की थी।

अध्याय- 9

विश्व का बदलता परिदृश्य (1300- 2000 ई. तक)

- रोमन, इस्लामिक और यायावर साम्राज्य की स्थापनाओं और उनके आपसी संघर्षों से कालान्तर में विश्वव्यापी सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए थे। फ्रान्सिसी व इंग्लैंड का समाज उस समय मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित हो गया था- पादरी वर्ग, अभिजात वर्ग व कृषक वर्ग।
- पादरी वर्ग का समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ये लोग आजीवन अविवाहित रहते थे। पादरियों (पोप) के पास राजा द्वारा दी गई भूमि होती थी, जिनसे ये लोग कर प्राप्त कर सकते थे। पादरी लोग टाईथ नामक धार्मिक कर वसूलते थे।
- ईसाई समाज में एक वर्ग और था, जो चर्च के बाहर एकान्त में मोनैस्ट्री या ऐबी (मठ) में रहता था। पुरुष और महिलाओं क्रमश: मोंक और नन कहा जाता था।
- समाज के जमींदार, सामंत व धनिक व्यापारीयों को अभिजात वर्ग कहा जाता था। बड़े भू-स्वामी और अभिजात वर्ग राजा के अधीन होते थे तथा किसान भू-स्वामियों के अधीन होते थे।
- रोटी देने वाले वर्ग को सेन्योर या लार्ड कहते थे। इनके घर को मेनर कहते थे। लार्ड द्वारा नाइट को भूमि का एक भाग दिया गया, उसे फ़ीफ कहा जाता था।
- फ्रान्सिसी समाज के कृषक वर्ग में किसान व मजदूर सम्मिलित थे। कृषक वर्ग समाज में भरण-पोषण का कार्य करता था। कृषकों के दो वर्ग स्वतन्त्र किसान व सर्फ (कृषि दास) थे।
- ग्यारहवीं सदी में इंग्लैंड में सामन्तवाद का उदय हुआ था। इस व्यवस्था में राज्य की भूमि को बड़े-बड़े जमींदारों में विभाजित कर दिया जाता था।
- सामन्तवाद शब्द फ्यूड(जर्मन भाषा का शब्द) से बना है, जिसका अर्थ है भूमि का टुकड़ा। फ्रांसीसी विद्वान मार्क ब्लॉक सामन्तवाद पर कार्य करने वाले प्रथम विद्वान थे।
- यूरोप महाद्वीप में 14वीं से 17वीं सदी तक नगरीय संस्कृति का अधिक विस्तार होने के कारण रोम, वेनिस, फ्लोरेंस आदि का उदय कला और विद्या के नए केन्द्रों के रूप में हुआ था।
- मानवतावाद वह विचारधारा है, जिसमें मानव जीवन की सुख और समृद्धि पर बल दिया जाता है। यूरोप में सर्वप्रथम विश्वविद्यालयों की स्थापना इटली में हुई थी और सर्वप्रथम मानवतावादी विषयों, जैसे- इतिहास, नीति दर्शन, अलंकार शास्त्र, कविता और व्याकरण का अध्ययन आरम्भ हुआ था।
- 19 वीं सदी के इतिहासकारों ने रेनेसां (पुनर्जागरण) शब्द का भी प्रयोग किया है, जो उस समय के सांस्कृतिक परिवर्तनों को बतलाता है।

- स्पेन निवासी अरबी दार्शनिक इब्न रुश्द ने दार्शनिक ज्ञान और धार्मिक विश्वासों के मध्य बढ़ रहे तनाव को सुलझाने का प्रयास किया था। इस काल में टॉलमी ने 'अलमजेस्ट' नाम से प्रसिद्ध खगोल शास्त्र की पुस्तक लिखी थी।
- माइकल ऐंजेलो ने सेंट पीटर गिरजे के गुम्बद को डिजाइन किया था। जोहानेस गुटेनबर्ग द्वारा 1455 ई. में प्रथम छापेखाने की शुरुआत की गई थी।
- शरीर विज्ञान, रेखा गणित, भौतिकी और सौन्दर्य की उत्कृष्ट भावना ने इतालवी कला को नया रूप दिया था, जिसे कालान्तर में **यथार्थवाद** कहा गया था।
- भौतिकवादी दृष्टिकोण में लोग विनम्रता से बोलना, अच्छे कपड़े पहनना, सभ्य दिखना आदि को महत्त्व देते थे। सार्वजनिक जीवन में सम्पन्न परिवार व अभिजात वर्ग के पुरुषों का प्रभुत्व था।
- मानवतावादी विचारों की जागृति और चर्च के अधिक करों के कारण लोगों चर्च का विरोध किया था। उन करों में एक **पाप-स्वीकारोक्ति** नामक दस्तावेज था। उस समय लोगों का मानना था कि पाप-स्वीकारोक्ति का अर्थ पादरीयों द्वारा लोगों से धन ऐंठना था।
- 1517 ई. में एक युवा भिक्षु मार्टिन लूथर (जर्मनी) ने कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया और लोगों से कहा कि- 'मनुष्य को ईश्वर से सम्पर्क साधने के लिए पादरी की जरुरत नहीं है।' इस अभियान को प्रोटैस्टेंट सुधारवाद नाम दिया गया था।
- कोपरनिकस (1473 - 1543 ई.) ने ईसाईयों के सिद्धान्त 'पृथिवी पापों से भरी है, इस कारण यह स्थिर है।' का खण्डन कर लोगों को बताया कि 'पृथिवी सहित सारे ग्रह, सूर्य के चारों और परिक्रमा करते हैं'।
- गैलिलीयो ने अपने ग्रन्थ 'दि मोशन' में गतिशील विश्व के सिद्धान्तों की पुष्टि की थी। इस क्रान्ति ने न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त के साथ अपनी पराकाष्ठा की ऊँचाई को छू लिया था।
- 15वीं से 17वीं सदी के मध्य यूरोपियन संस्कृति का कैरेबियन द्वीपों, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका में विस्तार के कारण, उसका वहाँ की मूल संस्कृतियों के साथ संघर्ष हुआ था।
- लियानार्दो द विंची एक प्रसिद्ध चित्रकार था, जिसकी मोनालिसा और द ब्रम्हाण्ड लास्ट सपर पेंटिंग्स अत्यधिक चर्चित रही।
- यूरोप की अर्थव्यवस्था में 14-15वीं सदी के मध्य प्लेग व युद्धों के कारण आई मन्दी और कुंस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार था, जिसके कारण यूरोप से पूर्वी देशों जाने वाला स्थल मार्ग बन्द हो गया था।
- स्पेन निवासी क्रिस्टोफर कोलम्बस (1451 ई.-1506 ई.) ने इस साहसिक कार्य प्रारम्भ 3 अगस्त 1492 ई.को किया था। 12 अक्टूबर 1492 ई. को वह बहामा द्वीप समूह के गुआनाहानि द्वीप पर पहुँचा था।

- दक्षिण अमेरिका की स्थानीय संस्कृतियों में पेरू की केचुआ या इंका संस्कृति थी। यहाँ की प्रशासनिक भाषा केचुआ थी। इंका राज्य में सोने- चाँदी प्रचुर मात्रा में मिलता था।
- पुर्तगाल निवासी पेड्रो अल्वारिस कैब्राल 1500 ई. में जहाज से भारत के लिए रवाना हुआ था परन्तु तूफानी समुद्रों से बचने के लिए, उसने पश्चिमी अफ्रीका का चक्कर लगाया और वह ब्राजील (दक्षिण अमेरिका) पहुँच गया था।
- दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी समुद्र तट और ब्राजील नामक पेडों के जंगलों में **तुपिनांबा** समुदाय के लोग निवास करते थे। ब्राजील में टिंबर (इमारती लकड़ी) प्रचुर मात्रा में थी।
- 1300 ई. के बाद विश्व में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास के कारण अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए थे। इन आर्थिक परिवर्तनों के मूल में ब्रिटेन की औद्योगिक क्रान्ति (1780 ई. के दशक से 1850 ई के दशक तक) थी।
- 17 वीं सदी के पश्चात् फ्रान्स, इंग्लैण्ड, हॉलेण्ड जैसे देशों ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार कर, अमेरिका, एशिया, अफ्रीका में अपने उपनिवेश स्थापित करने शुरू कर दिए थे।
- 18 वीं से 20 वीं सदी के मध्य दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड के भागों में यूरोप और एशियाई अप्रवासी बसने लगे थे।
- औद्योगिक क्रान्ति शब्द का सबसे पूर्व प्रयोग अरनोल्ड टायनबी ने 1884 ई. में अपनी पुस्तक लेक्चर्स ऑन दि इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इंग्लैण्ड में किया था। भाप से चलने वाला पहला रेल इंजन 1814 ई. में स्टीफेंसन द्वारा बनाया गया थी।
- 1788 ई. से 1796 ई. की समयावधि को नहरोन्माद के नाम से जाना जाता हैं। इस अवधि में 46 नयी नहर परियोजनाओं की नींव रखी गई थी।
- फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो ने अमेरिका के मूल निवासियों के विषय में कहा कि ये लोग सभ्यताओं की विकृतियों से अछूत होने के कारण प्रशंसनीय थे। 4 जुलाई 1776 ई. को अमेरिका ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त हो गया और संयुक्त राज्य अमेरिका नामक नए गणराज्य का अभ्युदय हुआ था।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में 1840 ई.सोना मिलने के संकेत मिले तो सोना प्राप्त करने के लिए हजारों यूरोपियन लोग अमेरिका पहुँचे थे। यह घटना विश्व इतिहास में गोल्ड रश के नाम से जानी जाती है।
- आदिमानव (ऐबॉरिजिनीज) ऑस्ट्रेलिया में लगभग 40,000 वर्ष पूर्व न्यू गिनी से आए थे। 18वीं सदी के अन्तिम कालखण्ड में ऑस्ट्रेलिया में मूल निवासियों के 350 से 750 समुदाय थे।

- ब्रिटिश लोग 1770 ई. में पहली बार ऑस्ट्रेलिया पहुँचे थे। 1901 ई. में 6 राज्यों को मिलाकर ऑस्ट्रेलियाई संघ का निर्माण हुआ, जिसकी राजधानी 1911 ई. में कैनबरा को बनाया गया था।
- वर्तमान ऑस्ट्रेलिया में यूरोप और एशिया के आप्रावासियों की जनसंख्या अधिक है इसलिए 1974 ई. से यहाँ की राजकीय नीति बहुसंस्कृतिवाद को प्रधानता दी गई है।
- 12वीं सदी से पूर्व जापान पर क्योतो के रहने वाले सम्राट का शासन था, 12वीं सदी में शोगुनो का शासन तथा तोकुगावा परिवार ने 1603 ई.-1867 ई. तक शासन किया था।
- जापान में तोकुगावा वंश के विरुद्ध उपजे असन्तोष के कारण 1867-68 ई. में मेंजी वंश की पुनर्स्थापना हुई थी। अमेरिका ने चीनी बाजार में प्रवेश करने के लिए जापान के राजनयिक और व्यापारिक सम्बन्ध बनाए थे। अमेरिकी मदद से मेंजी सरकार की शासन में पकड़ मजबूत हो गई थी।
- जापान में 1909 ई. में कारखानों की संख्या 1,000 थी, जो 1940 ई. में 5,50,000 हो गई। जापान में पहली रेल लाइन (1870-72 ई.) टोक्यो और योकोहामा बन्दरगाहों के मध्य बिछाई गई। जापान में 1872 ई. में बैंकिंग संस्थाओं की प्रारम्भ हुआ था।
- 1943 ई. में **आधुनिकता पर विजय** नाम से एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ था। इसमें जापानी दुविधा 'आधुनिक रहते पश्चिम पर कैसे विजय प्राप्त की जाए' पर चर्चा हुई थी। अमेरिका ने 6 तथा 9 अगस्त 1945 ई. में हिरोशिमा व नागासाकी पर नाभिकीय बम गिराकर, जापान का विनाश कर दिया था।
- ब्रिटेन व चीन के मध्य 1839-42 ई. के मध्य प्रथम अफीम युद्ध हुआ था। परिणामस्वरूप चीन में सुधार तथा परिवर्तन की मांग उठने लगी थी। इन सुधार और परिवर्तनों के अन्तर्गत आधुनिक प्रशासकीय, सैन्य, शिक्षा व्यवस्था निर्माण के लिए नीतियाँ बनाई गई थीं।
- चीन में साम्यवादी दल की स्थापना रूसी क्रान्ति के बाद 1921 ई. में हुई थी। माओ त्सेतुंग (1893-1976 ई.) के समय चीनी साम्यवादी पार्टी एक शक्तिशाली राजनीतिक ताकत बनी, जिसने कुओमीनतांग पर विजय प्राप्त की थी। 1949 ई. में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना पार्टी की सरकार बनी, जो **नए लोकतन्त्र** के सिद्धान्तों पर आधारित थी।

अध्याय-10

भारत में मन्दिर स्थापत्य

- संस्कृत वाङ्मय में मन्दिरों के लिए देवालय, देवायतन, देवकुल, आदि शब्द प्रयुक्त किये गए हैं। मन्दिरों का सर्वप्रथम उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण' में मिलता हैं। भारत में मन्दिर स्थापत्य कला का विकास गुप्तकाल में हुआ था।
- सामान्यतः प्रत्येक मन्दिर में दो तरह की कक्षीय संरचना होती हैं- गर्भगृह और मण्डप। गर्भगृह में मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। मन्दिर के गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा स्थल होता है।
- मण्डप को मन्दिर का प्रवेश कक्ष कहा जाता है जो अत्यधिक विशाल होता है। गर्भगृह के ऊपर छतरीनुमा रचना होती है, जिसे शिखर या विमान कहते हैं।
- नागर शैली उत्तरी भारत में हिमालय से लेकर विन्ध्य प्रदेश के भू-भाग तक विस्तृत थी। गर्भगृह पर ऊँचे शिखर इस शैली की मुख्य विशेषता है। शिखर के ऊपर '**आमलक**' नामक बड़ा चक्र होता है।
- उत्तरी भारत में देवालयों का निर्माण सर्वप्रथम नगरों में होने के कारण इसे नागर शैली कहा गया था। नागर शैली को 8 वीं से 13 वीं सदी के उत्तर भारत में शासकों ने संरक्षण दिया था।
- सूर्य मन्दिर, मोढेरा (गुजरात) का निर्माण भीमदेव प्रथम ने गुजरात के मेहसाना जिले में 1026 ई में नागर शैली में करवाया था।
- खजुराहो के मन्दिर समूहों में एक और प्रसिद्ध मन्दिर 'कंदरिया महादेव मन्दिर' है। इसका निर्माण भी चंदेल राजा धंगदेव द्वारा 999 ई. में करवाया गया था।
- सूर्य मन्दिर, कोणार्क (ओडिशा) नागर शैली में निर्मित विश्व प्रसिद्ध मन्दिर गंग वंश के नरसिंह देव प्रथम द्वारा बनवाया गया था।
- लिंगराज मन्दिर, भुवनेश्वर (ओड़िशा) का निर्माण 10वीं-11वीं सदी में किया गया था। यह मन्दिर भगवान शिव के एक रूप हरिहर को समर्पित है।
- विमलवसही मन्दिर 1031 ई. में गुजरात के शासक भीम के मन्त्री विमल शाह द्वारा बनवाया गया था। यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है।
- लूण वसही मन्दिर 1231 ई. में गुजरात के दो भाइयों वास्तुपाल और तेजपाल (वाहेला शासक) द्वारा बनवाया गया था। यह मन्दिर 22वें जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ को समर्पित है।
- चन्द्रमा (सोम) ने भगवान शिव को ही अपना नाथ (स्वामी) मानकर यहाँ तपस्या की थी इसलिए इसे सोमनाथ कहा जाता है। सर्वप्रथम यहाँ एक मन्दिर ईसा के पूर्व में अस्तित्व में था।

- 1024 ई. में महमूद गजनवी ने अपने 5000 साथियों के साथ सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण कर यहाँ से अथाह धन-सम्पत्ति लूटकर अपने साथ ले गया था। तदुपरान्त गुजरात के शासक भीम और मालवा के शासक भोज ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था।
- सोमनाथ मन्दिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने करवाया था। 1 दिसम्बर, 1955 को भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इसे राष्ट्र को समर्पित किया था।
- द्रविड़ शैली का विकास एवं विस्तार दक्षिण भारत में हुआ है। इस शैली के मन्दिरों की बनावट की विशेषता वर्गाकार गर्भगृह पर पिरामिडनुमा ऊपर की ओर आकार में छोटी होती हुई मंजिलों का बना शिखर, जिसका शीर्ष छाया आठ कोणों के गुम्बद के आकार का होता है।
- मीनाक्षी मन्दिर तमिलनाडु प्रान्त के प्रसिद्ध नगर मदुरै में स्थित है। इस मन्दिर का मुख्य गर्भगृह 3500 वर्ष से अधिक पुराना माना जाता है। इस मन्दिर में भव्य 12 गोपुरम् हैं।
- महाबलीपुरम् का तटीय मन्दिर पल्लव राजा नरसिंह वर्मन द्वितीय (700-728 ई.) द्वारा बनवाया गया। यह मन्दिर बङ्गाल की खाड़ी के तट पर स्थित है, इसलिए इसे तट मन्दिर कहा जाता है।
- तंजावुर का राजराजेश्वर मन्दिर (तमिलनाडु)- 1000 वर्षों से भी अधिक पुराना होने के बाद भी आज यह उत्कृष्ट अवस्था में है। चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा इसका निर्माण 1003-1010 ई. के मध्य करवाया गया। इस कारण इसे राजराजेश्वर मन्दिर नाम दिया गया था।
- काञ्ची का कैलाशनाथ मन्दिर (तमिलनाडु) का निर्माण कार्य 658 ई में राजसिंह द्वारा आरम्भ कर, राजा महेन्द्र वर्मन द्वारा 705 ई में पूर्ण करवाया था। पट्टदकल का विरूपाक्ष मन्दिर (कर्नाटक) का निर्माण विक्रमादित्य द्वितीय की रानी लोका महादेवी ने करवाया था।
- पद्मनाभ स्वामी मन्दिर का निर्माण लगभग 10वीं सदी में हुआ था तथा इसका पुनर्निर्माण 1750 ई. में त्रावणकोर के शासक मार्तण्ड वर्मा ने करवाया था।
- कैलाश मन्दिर द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट नमूना है। इसका निर्माण राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम द्वारा करवाया गया था। यह मन्दिर एक पहाड़ को शीर्ष से नीचे तक काटकर बनाया गया है।
- यह शैली नागर व द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है। इस शैली के मन्दिर विंध्याचल पर्वत से लेकर कृष्णा नदी तक पाए जाते हैं। यह शैली 7 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में लोकप्रिय हुई और जिसका उल्लेख ग्रन्थों में बेसर के नाम से किया गया है।

अध्याय- 11

भारत की सांस्कृतिक विरासत

- मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति का मूल आधार सर्व कल्याण रहा है। बृहदारण्यक उपनिषद् में इस कथन की पुष्टि होती है- सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दु:ख भाग्भवेत्। (1.4.14)
- राधा कुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक में 'दी फण्डामेंटल यूनिटी आफ इंडिया' में इसी सांस्कृतिक विस्तार को देखते हुए वृहत्तर भारत शब्द का प्रयोग किया है। इसका आशय है कि उस समय जावा, मलाया, सुमात्रा, बर्मा, लंका, बोर्निया, कम्बोडिया, चंपा, बाली, आदि भारतीय उपनिवेश थे।
- संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण की प्रक्रिया सांस्कृतिक विरासत कहलाती है। कला, संगीत, वाङ्मय, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, धर्म, दर्शन, यज्ञ, विज्ञान, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, पर्व और त्यौहार, जीने के तरीके सभी हमारी सांस्कृतिक विरासत के अङ्ग हैं।
- यज्ञ हमारी भारतीय संस्कृति की मूल्यवान विरासत है। मंत्रोच्चार के साथ किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाने वाला हवन, यज्ञ कहलाता है। यज्ञ के द्वारा विभिन्न खाद्य पदार्थों व मूल्यवान सुगंधित पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से संसार के कल्याण के लिए देवताओं को अर्पित किया जाता है।
- धर्मशास्त्रों में भी मुख्य रूप से सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म(मुण्डन), विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, अन्त्येष्टि संस्कार।
- श्रुति और स्मृति सनातन धर्म के पवित्र ग्रन्थ हैं। वेदों को श्रुति कहा जाता है क्योंकि वेदों को सर्वप्रथम परमात्मा ने ऋषियों को सुनाया था। वेदों को श्रवण परम्परा से गुरु द्वारा शिष्यों को दिया जाता रहा है।
- वेद के चार भाग हैं- संहिता- मन्त्र भाग, ब्राह्मण ग्रन्थ-गद्य भाग (कर्मकाण्ड की विवेचना), आरण्यक (गूढ तत्त्वों की विवेचना) तथा उपनिषद् (ब्रह्म और आत्मा के सम्बन्धों की विवेचना)। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद श्रुति वाङ्मय हैं, जो अपरिवर्तनीय, शाश्वत व सैद्धान्तिक ज्ञानकोष है।
- स्मृति ग्रन्थों में मानव के आचार व व्यवहार सम्बन्धी नियमों की व्याख्या की गई है। धर्मशास्त्र व धर्मसूत्र, आगम शास्त्र, मनुस्मृति आदि हैं। इनके अतिरिक्त पुराण, श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, दर्शन आदि सम्मिलित हैं।
- संस्कृत भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया है। संस्कृत वाङ्मय में गणित, दर्शन, व्याकरण, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, आदि के विशाल भण्डार हैं।

- ब्रह्मपुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिंग पुराण, वराह पुराण, स्कन्द पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण व ब्रह्माण्ड पुराण अठारह पुराण हैं।
- आचार्य विश्वनाथ के अनुसार जिसमें सर्गों का निबन्धन होता है, वह महाकाव्य कहलाता है। महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा इतिहासाश्रित होना चाहिए।
- प्राचीन संस्कृत साहित्य में पञ्च महाकाव्य- रामायण (वाल्मीकि), महाभारत (वेद व्यास), बुद्धचरित (अश्वघोष), कुमारसम्भवम् (कालिदास), रघुवंश (कालिदास), किरातार्जुनीयम् (भारवि), शिशुपाल वध (माघ), नैषधीय चरितम् (श्रीहर्ष) का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- वैदिक दार्शनिक अवधारणाओं में षट् दर्शन के सम्प्रदायों का उद्भव हुआ। ये दर्शन वेदों की प्रमाणिकता स्वीकार करते हैं, इसलिए ये आस्तिक दर्शन कहलाते हैं। सांख्य, योग, न्याय, वेशेषिक, पूर्व मीमांसा, वेदांत और आस्तिक दर्शन हैं। इनके अतिरिक्त चार्वाक, जैन, बौद्ध दर्शन नास्तिक दर्शन हैं।
- ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में समज के चारों वर्णों को विराट पुरुष के चार अङ्ग बतलाया है। वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया गया है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
- **आमन्त्रयध्वं राष्ट्रेषु ब्राह्मणान् भूमिपानथ। विशश्च मान्यान् शूद्रांश्च सर्वानानयतेति च॥** (सभापर्व 33.41) इस श्लोक में युधिष्ठर की आज्ञा से सहदेव, दूतों से कहता है कि तुम लोग सभी राज्यों में जाकर वहाँ के राजाओं ब्राह्मणों, वैश्यों और सभी शूद्रों को निमन्त्रित कर बुला ले आओ।
- वैदिक वाङ्मय में श्रेष्ठ विधानों से युक्त आश्रम व्यवस्था का उल्लेख है। आश्रम व्यवस्था को संसार की सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति माना जाता है। प्राचीन मनीषियों ने सम्पूर्ण मानव जीवन काल को 100 वर्ष का मानकर बराबर चार भागों में विभाजित किया था।
- हमारी सनातन वैदिक संस्कृति में पर्व, उत्सवों व त्यौहारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। त्यौहार हमें हमारे परिवार, समाज को एक साथ मिलाने व साथ रहने के अवसर प्रदान करते हैं। पर्व व त्यौहारों से आपसी मेल-जोल व पारस्परिक भाई-चारा भी बढ़ता है।
- तीर्थयात्रा करने से व्यक्ति को आत्मसन्तुष्टी प्राप्त होने के साथ-साथ देश के विभिन्न क्षेत्रों की विविध भाषा, बोली, खानपान, पहनावा, रहन-सहन, रीति-रिवाज,जलवायु, श्रेष्ठ पुरूषों–संतों का सत्संग आदि से का ज्ञान प्राप्त होता है।
- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के अनुसार भारत के सकल घरेलू उत्पाद में तीर्थ यात्राओं का 2.32 % योगदान है।भारत में मन्दिरों की अर्थव्यवस्था तीन लाख करोड़ रूपये है।

अध्याय -12

भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल

- तीर्थ हमारी सनातन परम्परा में विशेष महत्त्व रखते हैं। ये धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व वाले विशिष्ट ऊर्जा के केन्द्र होते हैं, इसलिए इन्हें पवित्र स्थल कहा जाता है। इन स्थलों पर आने वाले यात्रियों में पवित्रता का सञ्चार होता है।
- आदि शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में चार पवित्र तीर्थ स्थलों की स्थापना की थी, जिन्हें चार धाम के नाम से जाना जाता है। ये चार धाम हैं- उत्तर में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारका, पूर्व में जगन्नाथ पुरी व दक्षिण में रामेश्वरम हैं।
- बद्रीनाथ पावन धाम अलकनंदा नदी के किनारे 3133 मी. की ऊँचाई पर नर व नारायण पर्वत की गोद में 'बद्रीवन' में उत्तराखण्ड राज्य के चमोली जिले में स्थित है।
- भारत की पश्चिम दिशा में गुजरात राज्य में अरब सागर के तट पर द्वारका धाम स्थित है। इसे मोक्ष के प्रवेश द्वार के रूप में माना जाता है।
- ओड़िशा राज्य के तटवर्ती नगर पुरी में भगवान जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर भी श्रीकृष्ण भगवान को समर्पित है। इस मन्दिर का निर्माण कलिंग शासक अनन्तवर्मन चोड़गंग देव ने 12वीं सदी में आरम्भ किया और वर्तमान स्वरूप राजा भीमदेव द्वारा दिया गया था।
- जगन्नाथ मन्दिर में काष्ठ निर्मित विग्रह हैं। जगन्नाथ मन्दिर के शिखर पर लगा ध्वज सदैव हवा के विपरीत दिशा में लहराता है। इस मन्दिर के ऊपर से कभी किसी पक्षी या विमान को उड़ते हुए नहीं देखा गया। शिखर की छाया कभी भी भूमि पर दिखाई नहीं देती है।
- रामेश्वरम् धाम भारत के दक्षिण में तमिलनाडु प्रान्त के रामनाथपुरम् जिले में स्थित है। रामेश्वरम् को **दक्षिण का काशी** भी कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए रामेश्वरम् में ज्योर्तिलिङ्ग की स्थापना की थी।
- पुराणों के अनुसार शिवजी जहाँ-जहाँ ज्योति स्वरूप में स्वयं प्रकट हुए, उन स्थानों को ज्योतिर्लिङ्गों के रूप में जाना जाता है। ज्योर्तिलिङ्गों की स्थापना सृष्टि के कल्याण और गतिमान बनाए रखने के लिए ऊर्जा स्थलों के रूप में की गई है।
- काल गणना से परे होने की पुनरूक्ति के कारण शिव को महाकाल कहा जाता है। भारतीय कालगणना में उज्जैन को पृथिवी का केन्द्र माना जाता है। महाकाल कॉरिडोर का लोकार्पण 11 अक्टूबर, 2022 को माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया था।

- श्री विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग को 'श्रीकाशी विश्वनाथ' के नाम से भी जाना जाता है। यह उत्तरप्रदेश के काशी (वाराणसी) नगर में स्थित है। काशी सभी धर्मों स्थलों में सर्वाधिक महत्त्व रखती है। भगवान विष्णु ने सृष्टि-कामना से यही पर शिवजी की तपस्या की थी।
- काशी विश्वनाथ मन्दिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण 1780 ई. में रानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा करवाया गया था। 1853 ई. में पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने 1000 किलो ग्राम सोने से मन्दिर के शिखरों को स्वर्ण मण्डित करवाया था। काशी-विश्वनाथ कॉरीडोर का लोकार्पण 13 दिसम्बर, 2021 को प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया था।
- हिन्दू मान्यता के अनुसार जहाँ देवी सती के शरीर के अङ्ग या आभूषण गिरे, वो स्थान शक्तिपीठ कहलाते हैं। वर्तमान में 52 शक्तिपीठ अधिक प्रसिद्ध हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों के साथ-साथ, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, नेपाल और तिब्बत में स्थित हैं।
- जब गुरु, कुम्भ राशि में और सूर्य, मेष राशि में संक्रमण करते हैं, तब हरिद्वार में कुम्भ मेला आयोजित होता है। जब गुरू, मेष राशि में और सूर्य और चन्द्र, मकर राशि में संक्रमण करते हैं तब प्रयागराज में कुम्भ मेला आयोजित होता है।
- जब गुरु और सूर्य, कुम्भ राशि में संक्रमण करते हैं तब गोदावरी (नासिक) में कुम्भ मेला आयोजित होता है। जब सूर्य, मेष राशि में और गुरु, सिंह राशि में संक्रमण करते हैं तब क्षिप्रा तट (उज्जयिनी) में सिंहस्थ कुम्भ मेला आयोजित होता है।
- भारत में चार कुम्भ मेला स्थान का संकेत इस श्लोक में मिलता है- गङ्गाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे। कलसाख्योहि योगोहयं प्रोच्यते शङ्करादिभि:॥ हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जयिनी नासिक में प्रति तीन वर्ष बाद अर्थात 12 वर्ष में प्रत्येक स्थान पर कुम्भ महामेला का आयोजन होता है।

अध्याय-13

संविधान

- किसी देश या राज्य द्वारा शासन का सञ्चालन करने वाले नियमों व सिद्धान्तों के समूह को संविधान कहते हैं। संविधान के अभाव में राज्य में अराजकता व्याप्त होती है।
- भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा और लिखित संविधान है। भारतीय संविधान की शक्ति का स्रोत भारतीय जनता है।
- संविधान का कार्य,समन्वय और विश्वास की स्थापना करना है। भारतीय संविधान में निहित मूल अधिकार, कर्तव्य, न्याय व्यवस्था, चुनाव प्रक्रिया आदि भारतीय नागरिकों में संविधान और शासन के प्रति विश्वास और लोक समन्वय को सुदृढ करता है।
- संविधान का दूसरा प्रमुख कार्य राज्य में निर्णय-निर्माण की शक्ति का वितरण है। भारतीय संविधान में निर्णय-निर्माण की शक्ति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जनता में निहित होती है।
- संविधान का तीसरा कार्य किसी सरकार द्वारा अपने देश के नागरिकों के लिये कानून बनाने और लागू करने वाली शक्तियों की सीमा का निर्धारण करना है। संविधान द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन न तो सरकार और न ही जनता कर सकती है।
- संविधान का चौथा कार्य, जनाकांक्षाओं व उनके लक्ष्य की प्राप्ति है। भारतीय संविधान सरकार को वह शक्ति प्रदान करता है जिससे वह कुछ सकारात्मक, लोक कल्याणकारी कार्यों को कानून की सहायता से लागू कर सके।
- विश्व के किसी भी राष्ट्र के शासन व्यवस्था की पहचान, वहाँ के संविधान से होती है। भारतीय संविधान जातीयता या नस्ल को नागरिकता के आधार के रूप में मान्यता नहीं देता है। हमारे संविधान में निहित राज्य के नीति निर्देशक तत्त्व सरकार से लोगों की कुछ आकांक्षाओं को पूर्ण करने की अपेक्षा करते हैं।
- विश्व के अधिकांश देशों जैसे- भारत और अमेरिका आदि में संविधान एक लिखित प्रलेख है। इंग्लैण्ड के पास लिखित संविधान के स्थान पर प्रलेखों और निर्णयों की विस्तृत श्रृंखला को सामूहिक रूप से संविधान कहा जाता है।
- किसी संविधान की सफलता या असफलता उसके अस्तित्व में आने, निर्माताओं और उनकी शक्ति पर निर्भर करता है। भारतीय संविधान का निर्माण दिसम्बर 1946 ई. से नवम्बर 1949 ई. के मध्य

संविधान सभा द्वारा किया गया। इसका प्रेरणा स्रोत विविध राष्ट्रीय आन्दोलन रहे। हमारे संविधान का अंतिम प्रारूप व्यापक राष्ट्रीय आम सहमति को दर्शाता है।

- दक्षिण अफ्रीकी संविधान ने वहाँ की सरकार को पर्यावरण संरक्षण, अन्यायपूर्ण भेदभाव से लोगों को बचाने और सभी के लिये आवास तथा स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व सौंपा है।
- इण्डोनेशियाई संविधान में सरकार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण कर उनका सञ्चालन तथा गरीब और अनाथ बच्चों की देखभाल का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।
- 1990 ई. में नेपाल में बहुदलीय लोकतन्त्र प्रारम्भ हुआ था, परन्तु अनेक शक्तियाँ वहाँ के राजा में निहित थीं। नेपाल में सरकार और राजनीति की पुनर्संरचना के लिये सशस्त्र राजनीतिक आन्दोलन चलाये गये। 2008 ई. में नेपाल लोकतान्त्रिक गणराज्य बना और 2015 ई. में नये संविधान को अपनाया।
- संविधान की सन्तुलित रूपरेखा के लिए संवैधानिक संस्थाओं में शक्तियों का विभाजन किया जाना चाहिए। भारतीय संविधान में शक्तियों को विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका जैसी संवैधानिक संस्थाओं में विभाजित किया गया है।
- भारतीय संविधान का निर्माण कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव पर एक निर्वाचित संविधान सभा द्वारा किया गया है। संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसम्बर 1946 ई. में 389 सदस्यों की उपस्थिति में डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा (अस्थाई अध्यक्ष) की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई थी।
- 11 दिसम्बर को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थाई अध्यक्ष चुना गया और 13 दिसम्बर को पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा संविधान का उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। 14 अगस्त 1947 को विभाजन के बाद भारतीय संविधान सभा सदस्यों की संख्या 299 रह गई।
- कैबिनेट मिशन के सदस्य स्टेफोर्ड क्रिप्स, पेन्थिक लारेन्स और ए.बी .अलक्जेण्डर थे। 24 जनवरी 1950ई .को संविधान सभा द्वारा डॉ .राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया था। वर्तमान में 25 भाग 395 अनुच्छेद और 12 अनुसूची हैं।
- संविधान निर्माण के लिए संविधान सभा द्वारा 22 समितियों का गठन किया गया था। भारतीय संविधान के निर्माण में दो वर्ष, ग्यारह माह और अठारह दिन का समय लगा था। इस अवधि में संविधान सभा की बैठकें 166 दिनों तक चली थीं।
- प्रस्तावना के प्रमुख बिन्दु हैं- 1. भारत को सम्प्रभु, समाजवादी, पन्थनिरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने 2. उसके समस्त नागरिकों को न्याय (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक),

स्वतन्त्रता (विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना) प्राप्त कराने। 3. व्यक्ति की गरिमा 4. राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता।

- हमारे संविधान निर्माताओं ने विश्व की अन्य संवैधानिक परम्पराओं से सर्वोत्तम बातों को ग्रहण किया है। लगभग 60 देशों के संविधानों का गहन अध्ययन करके भारतीय संविधान को तैयार किया गया।
- भारतीय संविधान में लगभग 200 प्रावधान 'भारत शासन अधिनियम 1935', संविधान की सर्वोच्चता व मौलिक अधिकार अमेरिका, संसदीय शासन प्रणाली ब्रिटेन, नीति निर्देशक तत्त्व आयरलैण्ड, मौलिक कर्तव्य रुस और आपातकाल का प्रावधान जर्मनी से लिए गए हैं।
- पन्थ निरपेक्षता से अभिप्राय है सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण। संविधान व सरकार धर्म के मामले में तटस्थ है। जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार धर्म के चयन का अधिकार है। संविधान व सरकार, धर्म के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं करते हैं।
- सार्वभौम व्यस्क मताधिकार के माध्यम से देश की जनता अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त करती है। भारतीय संविधान प्रत्येक वयस्क नागरिक (18 वर्ष आयु प्राप्त) को बिना किसी भेदभाव के मत देने का अधिकार प्रदान करता है।
- भारत के लिए अनौपचारिक रूप से संविधान तैयार करने का प्रथम प्रयास 1895 ई. में "कांस्टिट्यूश ऑफ इडिया बिल' के नाम से हुआ।
- संघवाद सरकार का ऐसा रूप है, जिसमें शक्तियों का विभाजन केन्द्र व राज्य सरकारों के मध्य होता है। लिखित संविधान, शक्तियों का विभाजन, द्वैध शासन प्रणाली, संविधान की सर्वोच्चता आदि संघवाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
- विशेष श्रेणी के राज्यों के विकास के लिए धन केन्द्र सरकार द्वारा 90% अनुदान और 10% ऋण के रूप में प्रदान किया जाता है। भारतीय संविधान के भाग-21 के अनुच्छेद 370 के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर को 1969 ई. में विशेष राज्य की श्रेणी प्रदान की गई थी।
- विशेष श्रेणी को 5 अगस्त 2019 ई. समाप्त कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 371A-J तक नागालैंड, असम, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम और उत्तराखण्ड को विशेष श्रेणी का राज्य घोषित किया गया है।
- संविधान के संशोधन की बहुमत की प्रक्रिया का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 368 में है। भारतीय संविधान में 2020 ई. तक 104 संशोधन हो चुके हैं।

अध्याय-14

भारतीय शासन व्यवस्था के अङ्ग

- भारतीय शासन व्यवस्था के तीन अङ्ग-विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के नाम से जाना जाता है। सरकार के ये तीनों अङ्ग मिलकर शासन तथा कानून व्यवस्था को बनाए रखने और लोक कल्याण में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 79 के अनुसार संसद का गठन राष्ट्रपति, लोकसभा व राज्यसभा से मिलकर होता है। जब किसी विधायिका में दो सदन होते हैं तो उसे द्विसदनात्मक विधायिका कहते है।
- संसद, कार्यपालिका को नियन्त्रित करने का कार्य करती है। मन्त्रिपरिषद् तभी तक कार्य कर सकती है, जब तक की उसे लोकसभा में विश्वास मत प्राप्त होता है।
- संसद में बहुमत प्राप्त करने वाले दल को सत्ताधारी दल तथा इसका विरोध करने वाले सभी दलों को विपक्षीय दल कहते हैं। बहुमत प्राप्त दल का नेता प्रधानमन्त्री बनता है और राष्ट्रपति की सलाह पर मन्त्रिमण्डल का निर्माण करता है।
- संसद का प्रमुख कार्य विविध कानूनों का निर्माण कर, उन्हें स्वीकृति देना होता है। वास्तव में कानून निर्माण का कार्य कार्यपालिका के किसी मन्त्रि के नियन्त्रण में नौकरशाही करती है।
- संसद वार्षिक बजट के माध्यम से सार्वजनिक निधि के आय और व्यय पर नियन्त्रण रखती है। सरकार को कोई नया कर लगाने से पूर्व संसद की स्वीकृति लेना आवश्यक होता है। संसद के वित्तीय अधिकार सरकार को धन उपलब्ध करवाते हैं।
- सम्पूर्ण देश को सार्वजनिक महत्व के विषयों के बारे में जानकारी संसद से प्राप्त होती है क्योंकि लोकहित के मुद्दों एवं सरकारी नीतियों पर चर्चा संसद के दोनों सदनों के पटल पर होती है।
- संसद, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेती है। यह विभिन्न संसदीय समितियों के सदस्यों, पीठासीन एवं उपपीठासीन पदाधिकारियों के निर्वाचन का कार्य करती है।
- संसद राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति,सर्वोच्च और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को महाभियोग द्वारा पदमुक्त करने के प्रस्तावों पर विचार करना, संसद के न्यायिक कार्यों के अन्तर्गत आता है।
- संविधान के अनुच्छेद 81 के अनुसार लोक सभा में अधिकतम 550 सदस्य हो सकते हैं, परन्तु वर्तमान में हमारी संसद में 543 सदस्य हैं। लोकसभा सदस्य (530 सदस्य राज्यों से और 13 सदस्य केन्द्र शासित प्रदेशों से) प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली द्वारा निर्वाचित होते हैं।
- व्यवस्थापिका को अलग-अलग देशों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। जैसे- संसद (भारत), कांग्रेस (संयुक्त राज्य अमेरिका), ड्यूमा (रूस), पार्लियामेंन्ट (ब्रिटेन) आदि।

- 2019 तक राष्ट्रपति लोक सभा में 2 सदस्य (एंग्लो इण्डियन) मनोनीत करता है था परन्तु 104 वां सविंधान संशोधन अधिनियम 2019 के अनुसार इनका मनोनयन समाप्त कर दिया गया है।
- लोक सभा का कार्य काल 5 वर्ष का होता है परन्तु राष्ट्रपति द्वारा इसे समय से पूर्व भी भंग किया जा सकता है। आपातकाल में लोक सभा के कार्यकाल को 1 वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है।
- भारत में लोक सभा का पहली बार गठन 2 अप्रैल, 1952 ई. को हुआ था। लोकसभा की प्रथम बैठक 13 मई 1952 ई. को प्रारम्भ हुई थी।
- अनुच्छेद-312 के द्वारा राज्यसभा को अखिल भारतीय सेवाओं के सृजन का अधिकार प्राप्त है। राज्यसभा अनुच्छेद-249 के द्वारा राज्य सूची के किसी विषय को राष्ट्रीय महत्व का घोषित कर सकती है।
- राज्य सभा संसद का उच्च सदन है, जिसका कभी भी विघटन नहीं होता है। इसके सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है। प्रत्येक 2 वर्ष बाद इसके एक-तिहाई सदस्य सेवानिवृत्त होते हैं।
- राज्यसभा का पहली बार गठन 3 अप्रैल, 1952 को हुआ था। राज्य सभा की प्रथम बैठक 13 मई, 1952 को प्रारम्भ हुई थी।
- संसद में राज्यसभा संविधान के संघीय स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। राज्यसभा में दो प्रकार के सदस्य होते हैं -निर्वाचित और मनोनीत। संविधान के अनुच्छेद 80 के अनुसार राज्यसभा में अधिकतम 250सदस्य हो सकते हैं परन्तु वर्तमान में सदस्य हैं। 245
- राज्य सभा सदस्य निर्वाचित होने के लिए व्यक्ति की न्यूनतम आयु 30 वर्ष होनी चाहिए। जिस राज्य का वह प्रतिनिधित्व करना चाहता है, उसका नाम उस राज्य की मतदाता सूची में होना चाहिए।
- 1983 ई. में संसद की स्थायी समितियों की प्रणाली विकसित की गई थी। वर्तमान में इन स्थायी समितियों की संख्या 20 है।
- सरकार का वह अङ्ग, जो नीतिगत निर्णय लेने के साथ ही नियमों और कानूनों को सुनिश्चित एवं लागू कर, प्रशासन का कार्य करता है, कार्यपालिका कहलाता है।
- सरकार के प्रधानमन्त्री और उनके मन्त्रियों को राजनीतिक कार्यपालिका तथा कार्यपालिका में कार्यरत प्रशासनिक समूह के लोगों को स्थायी कार्यपालिका (प्रशासनिक कार्यपालिका) कहा जाता है।
- केन्द्रीय कार्यपालिका का निर्माण राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और मन्त्रिपरिषद से मिलकर होता है। इसका औपचारिक प्रधान राष्ट्रपति होता है जबकि व्यवहारिक प्रधान प्रधानमन्त्री होता है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 52 से 72 में राष्ट्रपति पद, उसके अधिकार और कार्यों के बारे में उल्लेख है। अनुच्छेद 52 के अनुसार भारत का एक राष्ट्रपति होगा।

- वर्तमान में भारत के राष्ट्रपति को 5,00,000 और उपराष्ट्रपति को राज्य सभा के सभापति के रूप में 4,00,000 मासिक वेतन सहित अन्य भत्ते प्रदान किए जाते हैं।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 352, 356 व अनुच्छेद 360 में आपात कालीन प्रावधान दिये गए है जिन्हें राष्ट्रपति की संकटकालीन शक्तियाँ कहते हैं।
- उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है जिसका कार्यकाल 5 वर्ष होता है। राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति ही राष्ट्रपति के समस्त कार्यों व दायित्वों का निर्वहन करता है।
- महाभियोग एक संवैधानिक प्रक्रिया है, जिसे संयुक्त राज्य अमेरीका के संविधान से लिया गया है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम व उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को पद से हटाने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 61, 124(4 व 5) 217 और 218 में इसका प्रावधान है।
- संविधान के अनुच्छेद 75(1) के अनुसार राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है। राष्ट्रपति सामान्यतः लोकसभा में बहुमतदल के नेता को प्रधानमन्त्री नियुक्त करता है।
- सुप्रीम कोर्ट के जज वी रामास्वामी के खिलाफ सन् 1993 में पहली बार महाभियोग लगा था। दो तिहाई बहुमत नहीं मिलने के कारण यह प्रस्ताव लोक सभा में पारित नहीं हुआ था।
- प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC) का पदेन अध्यक्ष होता है। इसके अतिरिक्त प्रधानमन्त्री 'नीति आयोग' का प्रमुख होता है। वर्तमान में भारत के प्रधानमन्त्री को 1,60,000 मासिक वेतन सहित अन्य भत्ते प्रदान मिलते हैं।
- अनुच्छेद 74 (1) के अनुसार राष्ट्रपति को उसके कार्यों में सहायता और सलाह देने के लिए एक मन्त्रिपरिषद के गठन का प्रावधान है, जिसका प्रमुख प्रधानमन्त्री होता है। मन्त्रिपरिषद में कैबिनेट मन्त्री, राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) व उपमन्त्री तीन प्रकार के मन्त्री होते हैं।
- 91वें संविधान संशोधन अधिनियम (2003 ई.) के द्वारा यह व्यवस्था की गई है कि मन्त्रिपरिषद के सदस्यों की संख्या सदन (केन्द्र में लोकसभा एवं राज्यों में विधानसभा) की कुल सदस्य संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।
- न्यायपालिका की स्वतन्त्रता से आशय विधायिका और कार्यपालिका, न्यायपालिका के कार्यों में किसी भी प्रकार की बाधा न पहुचाएँ, ताकि वह सुचारू रूप से निष्पक्ष रह कर कार्यों का निष्पादन कर सके।
- सर्वोच्च न्यायालय, देश में न्यायिक क्षेत्र की सर्वोपरी संस्था है, जो नई दिल्ली में स्थित है। इसके गठन से सम्बन्धित प्रावधान अनुच्छेद-124 में दिए गए हैं।
- मूल संविधान में सर्वोच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश सहित कुल 8 न्यायाधीशों की व्यवस्था की गई थी। वर्तमान में उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की कुल संख्या 34 (01 मुख्य न्यायाधीश व 33 अन्य न्यायाधीश) है। मुख्य न्यायाधीश का पद भारत में सर्वोच्च न्यायिक पद है।

- न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु तक अपने पद पर बने रह सकते हैं किन्तु इससे पूर्व भी वे अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को दे सकते हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 137 के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय को यह अधिकार प्राप्त है कि वह स्वयं द्वारा दिए गए आदेश या निर्णय पर पुनर्विचार तथा उचित समझे तो आवश्यक परिवर्तन भी कर सकता है।
- संविधान का अनुच्छेद 32 (संवैधानिक उपचारों का अधिकार) के अन्तर्गत सर्वोच्च न्यायालय मौलिक अधिकारों के हनन होने पर आवश्यक कार्यवाही करता है।
- अनुच्छेद 214 के अनुसार प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय का गठन किया जाता है किन्तु संसद विधि द्वारा दो या दो से अधिक राज्यों के लिए अथवा दो या अधिक राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए एक उच्च न्यायालय भी गठित कर सकती है।
- इलाहाबाद उच्च न्यायालय (उत्तर प्रदेश) देश का सबसे बड़ा उच्च न्यायालय है जहाँ कुल 160 न्यायाधीश कार्यरत हैं तथा हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय सबसे छोटा उच्च न्यायालय है जहाँ 13 न्यायाधीश कार्यरत हैं। देश का 25 वां उच्च न्यायालय 1 जनवरी, 2019 को आंध्रप्रदेश के अमरावती में स्थापित किया गया।
- जिला स्तर पर न्याय सुलभ कराने हेतु जिला न्यायालय स्थापित किये गये हैं। इन न्यायालयों में जिला स्तर पर प्रस्तुत मुकदमों तथा निचली अदालतों के निर्णयों पर की गई अपील की सुनवाई की जाती है।

अध्याय- 15

स्थानीय शासन

- भारत में स्थानीय शासन की परम्परा प्राचीन समय से ही रही है। उस समय भी स्थानीय शासन को ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में विभाजित किया गया था। शास्त्रों में ग्रामणी, ग्रामाधिपति, रेड्डी, पञ्चायतन आदि शब्दों का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में ग्रामणी को राज्यकृत कहा गया है।
- स्थानीय सरकार में जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी होती है। यह आम आदमी के सबसे नजदीक की शासन व्यवस्था है। स्थानीय स्वशासन से लोगों में नियोजन और संसाधनों के बेहतर प्रबन्धन की भावना पैदा होती है, इसे स्वस्थ राजनीति की प्रथम पाठशाला भी कहा जाता है।
- 1882 ई. में तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन द्वारा भारत में स्थानीय शासन संस्थाओं के विकास का एक प्रस्ताव लाया गया था। अत: लॉर्ड रिपन को 'स्थानीय शासन का जनक' कहा जाता है।
- 'भारत शासन अधिनियम 1919' द्वारा स्थानीय शासन को प्रान्तीय सरकारों के क्षेत्र में दे दिया गया। संविधान की सातवीं अनुसूची में स्थानीय शासन को राज्य सूची का विषय बनाया गया।
- बलवंत राय मेहता समिति ने त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की सिफारिश की थी। पंचायती राज व्यवस्था की शुरूआत 2 अक्टूबर, 1959 ई. को राजस्थान के नागौर जिले के बगदरी गाँव से हुई थी।
- स्थानीय ग्रामीण शासन को दृढता देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने संविधान में 73वां संशोधन किया। इसके द्वारा संविधान में एक नया भाग 9 (ए) जोड़ा गया है, जिसमें अनुच्छेद 243(क) से 243(ण) तक पञ्चायतीराज का उल्लेख है।
- संविधान की 11वीं अनुसूची में पञ्चायती राज संस्थाओं को 29 विषय दिए गए है किन्तु वास्तविक हस्तान्तरण राज्य सरकार की शक्ति है कि वह स्थानीय शासन को कितने विषय हस्तांतरित करती है। ये सारे विषय स्थानीय विकास व कल्याण की आवश्यकताओं से सम्बन्धित होते हैं।
- 74वाँ संविधान संशोधन 1 जून 1993 को लागू किया गया था। इसका सम्बन्ध नगरीय स्थानीय शासन से है। इस संविधान संशोधन द्वारा नगरीय स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा दिया गया है।
- नगरपालिका का गठन 20 हजार से 1 लाख की आबादी वाले क्षेत्रों में होता है। इसका मुखिया अध्यक्ष या चेयरमैन कहलाता है, जिसे अप्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा चुना जाता है।
- वर्तमान में ग्रामीण स्थानीय शासन में सम्पूर्ण भारत में 2,50,000 ग्राम पञ्चायतें, 6,000 पञ्चायत समितियाँ (नगर पञ्चायत) 780 जिला परिषदें हैं। वर्तमान में स्थानीय शासन में सम्पूर्ण भारत में 1400 नगर पालिकाएँ, 2,000 नगर परिषदें व लगभग 100 नगर निगम हैं।

अध्याय-16

भारत के पड़ोसी देश

- आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्रात्मक तथा विश्व की पाँचवी बड़ी अर्थव्यवस्था व्यवस्था वाला देश है। प्राचीन काल से ही भारत के व्यापारिक, सांस्कृतिक व धार्मिक सम्बन्ध सम्पूर्ण विश्व से रहे हैं।
- भारत भौतिक दृष्टि से एक उपमहाद्वीप प्रदेश है। भारत के 17 राज्यों की सीमा 8 देशों से लगती है। भारत के उत्तर में चीन, नेपाल, भूटान, दक्षिण में श्रीलंका एवं पूर्व में बांग्लादेश व म्यांमार तथा पश्चिम में पाकिस्तान व अफगानिस्तान पड़ोसी देश हैं।
- चीन, भारत का प्रमुख पड़ोसी देश है। चीन के विदेशी आधिपत्य से मुक्त (1949 ई.) होने पर भारत ने ही सर्वप्रथम चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता प्रदान कर, उसे संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थायी सदस्यता दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- 1954 ई. में दोनों देश के मध्य पंचशील समझौता हुआ। 1955 ई. में बाण्डुंग (इण्डोनेशिया) सम्मेलन में दोनों देशों ने एक-दूसरे का पूर्ण सहयोग करते हुये हिन्दी-चीनी, भाई-भाई का नारा दिया था।
- चीन की विस्तारवादी और एशिया पर एकाधिकार की नीति के कारण भारत और चीन सम्बन्धों में 1957 ई. से 1978 ई. का कालखण्ड टकराव और तनाव का रहा है।
- चीन-तिब्बत विवाद के अन्तर्गत 1958 ई. में तिब्बत में हुए विद्रोह का नेतृत्व आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा ने किया तथा 10 मार्च, 1959 ई. में दलाई लामा को भारत में शरण लेनी पड़ी।
- अक्टुबर 1962 ई. चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में भारतीय सेनाओं ने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए चीनी आक्रमण का जबाब दिया परन्तु सैन्य स्तर पर भारत् की पराजय हुई। चीन ने इस युद्ध में भारत के बड़े भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था।
- भारत से सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने सितम्बर, 2014 ई. में भारत यात्रा की थी। इसके पश्चात भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी भी मई, 2015 ई. में चीन की यात्रा पर गए थे। भारत और चीन का सीमा विवाद हल हो जाए तो वैश्विक राजनीति में दूरगामी परिणाम होंगे।
- उत्तर-पश्चिम में भारत का सबसे निकटतम पड़ोसी देश पाकिस्तान है। 1947 ई. से पूर्व पाकिस्तान नाम का कोई राष्ट्र नहीं था लेकिन दो राष्ट्र विचारधारा के कारण भारत को विभाजन स्वीकार करना पड़ा और पाकिस्तान नाम के नये राष्ट्र का उदय हुआ।
- पाकिस्तान ने 1965 ई., 1971 ई. और 1999 ई. में भारत पर आक्रमण किए। पाकिस्तान के इन आक्रमणों का जवाब भारतीय सेना ने, उसे परास्त कर दिया है।

- पाकिस्तान भारत के विरूद्ध अनेक प्रकार की कूटनीतिक चालें, सीमा उल्लंघन और आतंकी कार्यवाही करवाता रहता है, जैसे- 13 दिसम्बर, 2001 ई. को भारतीय संसद भवन, 26 नवम्बर, 2008 ई. को मुम्बई के ताज होटल, 14 फरवरी, 2019 ई. को पुलवामा में आतंकवादी हमले इसी के उदाहरण हैं।
- अब तक दोनों देशों के मध्य सिन्धु जल समझौता (1960 ई.), 1966 ई. में ताशकन्द समझौता (लाल बहादुर शास्त्री व अयूब खान) व 1972 ई. में शिमला समझौता (इन्दिरा गांधी व जुल्फिकार अली भुट्टो), 1999 ई. में लाहौर समझौता (अटल बिहारी वाजपेयी एवं नवाज शरीफ) हो चुके हैं।
- शिमला समझौते के तहत दोनों देशों के बीच 22 जुलाई, 1976 ई. को समझौता एक्सप्रेस के नाम से रेल सेवा आरम्भ की गई, जो वर्तमान में बन्द है। फरवरी, 1999 ई. में तत्कालीन भारतीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ऐतिहासिक लाहौर बस यात्रा के माध्यम से मित्रता की पहल की थी।
- पाकिस्तान ने फिर से विश्वासघात करके मई, 1999 ई. में भारत के कारगिल पर आक्रमण कर दिया। भारत ने 'ऑपरेशन विजय' चलाकर पाकिस्तान को बुरी तरह से परास्त किया था। कारगिल विजय की स्मृति में हम प्रतिवर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाते हैं।
- नेपाल, भारत का पड़ोसी देश है। उत्तर में नेपाल की सीमा चीन से लगती है तथा अन्य सभी ओर से यह भारत से घिरा हुआ होने के कारण नेपाल का भारत के लिए सामरिक महत्व अधिक है। भारत-नेपाल के मध्य 1950 ई. में शान्ति और मैत्री सन्धि भी हो चुकी है।
- उत्तर प्रदेश सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि 23 मार्च, 1989 ई. में पारगमन व द्विपक्षीय सन्धि की समाप्ति पर, नेपाल में हुए भारत विरोधी प्रदर्शन के कारण 728 कि.मी. लम्बी नेपाल-उत्तर प्रदेश सीमा पर नेपाल के 12 बाजारों के 5500 भारतीय दुकानदारों में से 4000 दुकानदार अपनी दुकान बन्द करके भारत आ गये थे।
- नेपाल के सामरिक महत्व को स्पष्ट करते हुए 17 मार्च, 1950 को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि नेपाल पर कोई भी सम्भावित आक्रमण निश्चित रूप से भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है।
- भूटान, भारत न केवल पड़ोसी और मित्र राष्ट्र है अपितु दोनों के मध्य इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिक परम्पराओं की दृष्टि से भी सम्बन्ध है।
- अगस्त 1949 ई. में दोनों देशों के बीच एक मैत्री सन्धि पर हस्ताक्षर हुए थे, जिसके अन्तर्गत दोनों देश पारस्परिक रूप से शान्ति बनाए रखने के लिए एक दूसरे के आन्तरिक मुद्दों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। जून 2014 में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए भूटान को चुना था।
- भारत ने म्यांमार के साथ मजबूत और वाणिज्यिक सम्बन्ध स्थापित किये हैं। 2010 ई. में लोकतन्त्र की स्थापना के पश्चात भारत-म्यांमार सम्बन्ध में खुशहाली का दौर शुरू हुआ है।

- दोनों देशों की सरकारें कृषि, सूचना व प्रौद्योगिकी, दूरसञ्चार, स्टील, तेल, प्राकृतिक गैस, खाद्य पदार्थ आदि मुद्दों पर एक-दूसरे का सहयोग कर रही हैं। म्यांमार की लोकतन्त्र समर्थक नेता व नोबेल पुरस्कार विजेता आंग सान सू की ने कहा था मैं खुद को आंशिक रूप से भारतीय मानती हूँ।
- श्रीलंका हिन्द महासागर में स्थित एक छोटा सा देश है, जो भारत के दक्षिण में स्थित है। पाक जलडमरूमध्य दोनों देशों के मध्य अन्तार्राष्ट्रीय सीमा रेखा का निर्धारण करता है।
- प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी व अन्तार्राष्ट्रीय हस्तक्षेप के पश्चात 6 दिसम्बर, 1971 ई. में बांग्लादेश को एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में मान्यता मिली।
- वर्तमान समय में दोनों देशों के मध्य मैत्री सम्बन्ध तो है लेकिन कुछ मुद्दों पर विवाद की स्थिति बनी हुई है, जैसे- गङ्गा व तीस्ता नदी जल विवाद, तीन बीघा गलियारा, न्यूमर द्वीप चकमा शरणार्थी समस्या, बांग्लादेशी अल्पसंख्यकों द्वारा अवैध रूप से भारत आगमन आदि हैं।
- जून 1999 ई. में भारत ने बांग्लादेश के लिए कोलकाता- ढाका बस सेवा प्रारम्भ की थी। मार्च 2021 ई. में भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी बांग्लादेश यात्रा के दौरान जेशोरेश्वरी शक्तिपीठ और मतुआ समुदाय के प्रसिद्ध मन्दिर ओरकाण्डी मन्दिर में पूजा अर्चना की थी।
- भारत-बांग्लादेश की कुछ समस्याओं जैसे- गङ्गा जल बँटवारा को लेकर फरक्का समझौता (1977 ई.) और गङ्गा जल सन्धि (1996 ई.), तीन बीघा गलियारा समझौता (2011 ई.)आदि हो चुके हैं।
- प्राचीनकाल में अफगानिस्तान भारत का अङ्ग था। आज भारत के अफगानिस्तान से भी मिले-जुले सम्बन्ध हैं। अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकवादी सक्रिय है, जिससे भारत भी प्रभावित है।
- वर्तमान में भारत, अफगानिस्तान में सबसे बड़ा क्षेत्रीय निवेशक है और उसके पुनर्निर्माण के लिए सबसे अधिक प्रतिबद्ध है। बहुत सारे भारतीय कामगार और भारतीय सेना का कुछ भाग अफगानिस्तान में बडे पैमाने पर सड़क मार्ग, रेलमार्ग, अस्पताल, स्कूल आदि के निर्माण कार्य में सहयोग कर रहे हैं।
- सन् 2021 ई. में तालिबान ने अफगानिस्तान के राष्ट्रपति असरफ गनी को अपदस्थ कर के अफगानिस्तान को अपने अधिकार में ले लिया है।

अध्याय- 17

भारतीय अर्थव्यवस्था

- इतिहासकार अंगस मैडीसन के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था तथा 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था।
- प्राचीन काल से ही भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि रहा है। इसके अतिरिक्त सूती और रेशमी वस्त्र उद्योग व धातु आधारित उद्योग भी अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहायक थे।
- अंग्रेजों ने कभी सत्यनिष्ठा से भारत की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय का आकलन ही नहीं किया था। कुछ भारतीय अर्थशास्त्रियों ने अपने स्तर पर ही आकलन किए, जिनमें दादा भाई नौरोजी, डॉ. वी. के. आर. वी. राव, आर. सी. देसाई, फिंडले सिराज आदि प्रमुख थे।
- औपनिवेशिक काल में भारत मूलतः कृषि अर्थव्यवस्था ही बना रहा। उस समय भारत की 85% जनसंख्या कृषि क्षेत्रक से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न थी।
- 19वीं सदी के अन्त में भारत में सूती वस्त्र व पटसन उद्योगों की स्थापना होने लगी थी। पटसन उद्योग विदेशियों की देन थी। सूती वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र व गुजरात तथा पटसन उद्योग बङ्गाल तक ही सीमित थे। 20 वीं सदी में भारत में लौह-इस्पात उद्योग का विकास प्रारम्भ हुआ।
- 1907 ई. में जमशेद नौशरवान जी टाटा द्वारा जमशेदपुर (टाटा नगर) में टाटा आयरन स्टील कम्पनी (टिस्को) की स्थापना की गई थी।
- स्वेज नहर 1869-1859)ईके निर्माण (. फर्डिनेंड डी लेसेप्स ने किया था। स्वेज नहर भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ती है।
- भारत में सर्वप्रथम जनगणना 1872 ई. में तथा सर्वप्रथम सम्पूर्ण जनगणना 1881ई. में हुई थी। इसके पश्चात् प्रत्येक 10 वर्ष बाद जनगणना होती रही है।
- वर्तमान में भारत में शिशु मृत्यु दर 30/1000 (2019 ई.) है। विश्व स्वास्थ्य संगठन 2020 के आंकडों के अनुसार भारत में जीवन प्रत्याशा 70.8 वर्ष है तथा विश्व रैंकिंग में भारत का 117वाँ स्थान है। जबकि ब्रिटिश भारत में जीवन प्रत्याशा 44 वर्ष थी। ब्रिटिश भारत में शिशु मृत्यु दर 218/1000 थी।
- ब्रिटिश भारत में कृषि सबसे बड़ा व्यवसाय था। देश की 70-75% कृषि, 10% विनिर्माण क्षेत्र तथा 15-20% जनसंख्या सेवा क्षेत्र में संलग्न थी। इस काल में क्षेत्रीय असमानता अत्यधिक थी तथा सेवा और विनिर्माण क्षेत्र में वृद्दि होने लगी थी।

- विश्व में तीन प्रकार की अर्थव्यवस्थाएँ प्रचलन में हैं- पूँजीवादी, समाजवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्था। आर्थिक प्रणाली को मिश्रित अर्थव्यवस्था कहा जाता है, जिसमें सशक्त सार्वजनिक क्षेत्रक के साथ लोकतन्त्र और निजी सम्पत्ति का भी स्थान है।
- भारत में योजनाएँ 5 वर्ष की अवधि की होती थीं, जिन्हें पञ्चवर्षीय योजना कहते थे। भारत में 1950 ई. में योजना आयोग का गठन किया किया गया था, जिसका पदेन अध्यक्ष प्रधानमन्त्री होता है।
- 1 जनवरी, 2015 से योजना आयोग का नाम परिवर्तित कर नीति आयोग कर दिया गया है। प्रशान्त चन्द्र महालनोबिस का पञ्चवर्षीय योजना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान है।
- संवृद्धि का आशय देश में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना होता है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से संवृद्धि का सूचक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में निरन्तर वृद्धि होना है।
- आत्मनिर्भरता से आशय है स्वयं पर निर्भर रहना। प्रथम सात पञ्चवर्षीय योजानाओं में आयातित खाद्यान्न, विदेशी प्रौद्योगिकी व पूँजी पर निर्भरता को कम करना इसमें सम्मिलित था।
- किसी देश के आर्थिक विकास के लिए संवृद्धि, आधुनिकीकरण व आत्मनिर्भरता के साथ-साथ समानता भी आवश्यक होती है। समानता के सिद्धान्त के द्वारा ही आर्थिक संवृद्धि का लाभ देश के अन्तिम पायदान पर स्थित नागरिकों को मिलता है। सकल घरेलू उत्पाद किसी राष्ट्र की समग्र आर्थिक गतिविधियों का एक व्यापक माप है।
- भारत में हरित क्रान्ति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन माने जाते है। किसानों द्वारा उत्पादन का बाजार में बेचा गया अंश विपणित अधिशेष कहलाता है। बीजों को उच्च उत्पादकता किस्में को (High Yielding Varieties- HYV) कहा जाता था।
- सरकार ने उद्योगों के विकास के लिए 1956 ई. में औद्योगिक नीति बनाई थी। इस नीति के अनुसार उद्योगों को तीन वर्गों- सार्वजनिक स्वामित्त्व, निजी और सार्वजनिक स्वामित्त्व, निजी स्वामित्त्व वाले उद्योगों में वर्गीकृत किया था।
- 1950 ई. में पाँच लाख रू. तक का अधिकतम निवेश करने वाली इकाई को लघु उद्योग इकाई कहा जाता था। वर्तमान में इसकी सीमा एक करोड़ है। सरकार ने ग्राम विकास में वृद्धि के लिए ग्राम व लघु उद्योग समिति (कर्व समिति) की स्थापना 1955 ई. में की थी।
- भारतीय औद्योगिक नीति, व्यापार से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थी। आरम्भिक सात पञ्चवर्षीय योजनाओं में व्यापार की विशेषता अन्तर्मुखी व्यापार की नीति थी। तकनीकी रूप से इस नीति को आयात प्रतिस्थापन कहा जाता है। आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर प्रशुल्क कहलाता है। आयातित वस्तुओं की निर्दिष्ट मात्रा को कोटा कहते हैं।

- 1950-51 ई. में औद्योगिक क्षेत्र की जीडीपी 13 % थी, जो 1990-91 में 24.6 % हो गई थी। 1980 के दशक में अर्थव्यवस्था के सुधार हेतु एलपीजी मॉडल (Liberalization, Privatization, Globalization) लाया गया था।
- भारत में उदारीकरण की वास्तविक शुरूआत 24 जुलाई 1991 ई. में हुई थी। LPG मॉडल से अर्थव्यवस्था में एकीकरण की प्रकिया को उदारीकरण एवं निजीकरण के द्वारा सुगम बनाया जाता है।
- नई आर्थिक नीति के चार प्रमुख अवयव हैं- उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण और बाजारीकरण। भारत में उदारीकरण के दो भाग थे- घरेलू और बाह्य उदारीकरण।
- निजीकरण से अभिप्राय है सार्वजनिक औद्योगिक इकाइयों के स्वामित्व और नियन्त्रण को निजी क्षेत्र में हस्तान्तरित कर देने से है।
- सार्वजनिक कम्पनियाँ दो प्रकार से निजी क्षेत्र में परिवर्तित हो सकती हैं- 1. किसी सार्वजनिक उपक्रम के स्वामित्त्व और प्रबंधन का परित्याग कर 2. सार्वजनिक उपक्रम को बेच कर। किसी सार्वजनिक उपक्रम को इक्विटी के माध्यम से जन सामान्य को बेचना 'विनिवेश' कहलाता है।
- महारत्न- इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (IOCL) और स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (SAIL)। नवरत्न- हिन्दुस्तान एरोनोटिक्स लिमिटेड(HAL) और महानगर टेलिफोन निगम लिमिटेड(MTNL)। लघुरत्न- भारत सञ्चार निगम लिमिटेड (BSNL) और एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (AAI)।
- वैश्वीकरण एक ऐसी सतत-प्रक्रिया है जिससे सम्पूर्ण संसार के देश एक-दूसरे से आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से आपस में जुड़े रहते हैं, इसे भूमण्डलीकरण भी कहा जाता है।
- भारत में भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया धीरे-धीरे गति पकड़ रही है। भारत में इसकी शुरूआत 1991 ई. से हुई। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव से उत्पादों की किस्में, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, विदेशी मुद्रा तथा विदेशी समक्ष निवेश, आधारभूत ढाँचों में विकास, सेवा क्षेत्रक में वृद्धि आदि कार्य हुए हैं।
- भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए तटीय करों में ही कमी के साथ विदेशी प्रत्यक्ष विनियोग तथा विदेशी प्रौद्योगिकी के लिए सरल कर दिया गया है। लगभग 2000 भारतीय कम्पनियों को ISO : 9000 प्रमाण पत्र प्रदान किये गए हैं, जो कि उच्च गुणवत्ता की गारंटी है।
- वैश्वीकरण के बढ़ने के कारण आज श्रमिकों का शोषण, कृषि की महत्ता में कमी, लघु उद्योगों के लिए समस्या, राष्ट्र प्रेम की भावना को आघात आदि समस्याओं में वृद्धि हुई है।

अध्याय- 18

निर्धनता व मानव पूँजी

- भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसकी अधिकांश आबादी कृषि पर आश्रित है। शिक्षित बेरोजगारों की देश में अधिकता है, जो रोजगार के लिए अत्यधिक संघर्ष करते हैं।
- अर्थशास्त्रियों के अनुसार निर्धनता की पहचान लोगों के व्यवसाय और संपत्ति के स्वामित्व के आधार पर की जाती है। उनके अनुसार ग्रामीण निर्धन प्रायः भूमिहीन कृषि श्रमिक या मजदूर और छोटी जोतों वाले किसान होते हैं। दादा भाई नौरोजी ने निर्धनता नापने के ¾ सूत्र की रचना की थी।
- दादा भाई नौरोजी ने स्वतन्त्रता पूर्व सर्वप्रथम निर्धनता रेखा की अवधारणा पर विचार किया था। आजादी के बाद भारत में निर्धनता के आंकलन के लिए कई प्रयास किए गए, जैसे- किसी व्यक्ति की आय, राष्ट्रीय औसत आय की 60% से कम है, तो उसे गरीब माना जाता है।
- अंग्रेजी शासन की नीतियों के कारण ग्रामीण व कृषि करों में वृद्धि हुई। यहाँ के खाद्यान्नों को भी विदेशों में निर्यात कर दिया जाता था। परिणामस्वरूप 1875 ई. से 1900 ई. की अवधि में अकालों से खाद्यान्नों के अभाव में 260 लाख लोगों की मृत्यु हुई थी।
- सन् 1973-74 में भारत में निर्धनों की संख्या 320 मिलियन (कुल जनसंख्या का 55%) से अधिक थी, जो सन् 2011-12 में घटकर 270 मिलियन (कुल जनसंख्या का 22%) रह गई थी।
- समय-समय पर कई अन्य योजनाएं व कार्यक्रम भी निर्धनता निवारण के लिए चलाए गए जिनमें प्रमुख हैं- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA), दीनदयाल अंत्योदय योजना, प्रधानमन्त्री जीवन ज्योति योजना, भारत निर्माण योजना, प्रधानमन्त्री आवास योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम व शहरी स्वरोजगार योजना, उज्जवला योजना आदि।
- मानव पूँजी से आशय ऐसे योग्य व्यक्तियों से है, जो पूर्व स्वयं प्रशिक्षित हो चुके हैं तथा छात्र रूपी मानव संसाधनों को अध्यापक, किसान, नर्स, डॉक्टर, इंजीनियर जैसी मानव पूँजी में परिवर्तित करते हैं।
- 1952 ई. में कुल सरकारी व्यय का शिक्षा पर 7.92% था जो 2014 ई. में बढ़कर 15.7% हो गया था। इसी प्रकार सकल घरेलू उत्पादन में इसका प्रतिशत 0.64 (1952 ई.) से बढ़कर 4.13 (2014 ई.) हो गया था। वर्ष 2021-22 में शिक्षा पर 93,224 करोड़ खर्च करने का अनुमान है।
- सामान्यतः रोजगार से आशय अपने परिवार के पालन-पोषण व आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाने वाला अर्थोन्मुखी कार्य है। देश के वे सभी लोग जो आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होते हैं, श्रमिक कहलाते हैं। हमारे देश में रोजगार की प्रकृति बहुमुखी है।

- वर्ष 2011-12 में भारत में श्रमिकों का आँकड़ा 473 मिलियन आँका गया था, जिनमें से तीन-चौथाई श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों के थे। देश में प्रत्येक 100 लोगों में से 35 श्रमिक है। शहरी क्षेत्रों में यह अनुपात 34 जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात 35 है। वर्तमान भारत में ई-श्रमिक पोर्टल पर रजिस्टर्ड श्रमिकों की संख्या लगभग 19 करोड़ है।
- नियमित वेतनभोगी श्रेणी में 23% पुरुष व 21% महिलाएँ हैं। भारत में लगभग 50 प्रतिशत महिला-पुरुष श्रमिक स्वरोजगारी वर्ग में आते हैं। अतः कहा जा सकता है कि देश में स्वरोजगार ही आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है।
- सामान्यतः आर्थिक क्रियाओं को आठ औद्योगिक वर्गों में विभाजित किया गया है- 1. कृषि 2. खनन और उत्खनन 3. विनिर्माण 4. विद्युत गैस एवं जलापूर्ति 5. निर्माण कार्य 6. वाणिज्य 7. परिवहन और भण्डारण 8. सेवाएँ।
- प्राथमिक क्षेत्रक- कृषि तथा खनन व उत्खनन। द्वितीयक क्षेत्रक- विनिर्माण, तथा निर्माण कार्य। तृतीयक क्षेत्रक- वाणिज्य, परिवहन व भण्डारण तथा सेवाएँ।
- बेरोजगारी वह अवस्था है, जिसमें व्यक्ति काम के अभाव के कारण बिना काम के रह जाता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार बेरोजगार उसे कहा जाता है, जो आधे दिन की अवधि में एक घण्टे का रोजगार भी नहीं पा सकता है।
- सरकार द्वारा महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 पारित किया गया, जिसके अन्तर्गत ग्रामीण परिवार के सदस्यों को 100 दिन के रोजगार का प्रावधान है।
- शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाएँ समाज के सभी वर्गों को सुनिश्चित रूप से सुलभ होनी चाहिए। इसके लिए सरकार ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ई., आयुष्मान योजना 2018 ई. आदि योजनाओं का क्रियान्वयन किया है।

अध्याय- 19

आधारिक संरचना

- भारत में विकास की दृष्टि से कुछ राज्यों में प्राथमिक क्षेत्रक का तथा कुछ राज्यों में द्वितीयक क्षेत्रक और कुछ में तृतीयक क्षेत्रक का अधिक विकास हुआ है। वे समस्त संसाधन जो किसी देश के विकास को सम्भव बनाते हैं, उस देश की आधारिक संरचना का निर्माण करते हैं।
- आधारिक संरचना, अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए प्रमुख क्षेत्रों (कृषि, उद्योग, घरेलू व विदेशी व्यापार व वाणिज्य) को सहयोगी सेवाएँ प्रदान करती हैं।
- आधारिक संरचना को दो भागों सामाजिक और आर्थिक आधारिक संरचना में बांटा गया है- 1. सामाजिक आधारिक संरचना में शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास आदि हैं। 2. आर्थिक आधारिक संरचना में ऊर्जा, परिवहन और सञ्चार आदि हैं।
- आधारिक संरचना किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की प्रभावी प्रणाली है। यह औद्योगीकरण में सहायता करती है। इससे कृषि के उत्पादन तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।
- बजट 2021-22 में आधारभूत संरचना क्षेत्र के अन्तर्गत नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (एनआईपी) के तहत आने वाली 217 परियोजनाओं की संख्या को बढ़ाकर 7400 कर दी है। जिन पर 1.1 लाख करोड़ रुपये खर्च करने का अनुमान है।
- आधारिक संरचना के विकास के कारण 2020 ई. भारत आवासीय ऊर्जा सर्वे (IRES) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 97 % क्षेत्र विद्युतीकृत हो चुके हैं।
- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट वर्ष 2021-22 के अनुसार पेयजल के लिए जल जीवन मिशन (2019 ई.) के अन्तर्गत 2 जनवरी, 2022 तक सरकार ने 5,51,93,885 घरों तक नल जल आपूर्ति प्रदान की है।
- किसी भी राष्ट्र की प्रगति में ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका उपयोग कृषि, उद्योग, उपकरणों के निर्माण, परिवहन आदि में होता है। भारत में ऊर्जा के कुल उपभोग का 74% भाग व्यावसायिक ऊर्जा से प्राप्त होता है।
- वर्ष 2020-21 की केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण के आँकड़ों के आधार पर भारत में कुल बिजली उत्पादन का 78% तापीय स्रोतों, 9% जल स्रोतों, 10% नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों तथा 3% परमाणु स्रोतों से प्राप्त होता है।
- स्वास्थ्य से आशय केवल व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य से ही नहीं अपितु उसकी कार्य क्षमता और समृद्धि से भी होता है। किसी राष्ट्र की समग्र संवृद्धि और विकास स्वास्थ्य से जुडी एक प्रक्रिया है।

- अस्पताल, डॉक्टर, नर्स, बेड, चिकित्सा के उपकरण आदि स्वास्थ्य आधारिक संरचना में सम्मिलित हैं। 31 मार्च, 2020 तक ग्रामीण क्षेत्रों में 1,55,404 उपस्वास्थ्य केन्द्र, 24,918 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और 5,183 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र काम कर रहे थे। वहीं शहरी क्षेत्रों में 2,517 उपस्वास्थ्य केन्द्र, 5,895 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और 466 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र थे।
- भारत सरकार का वर्ष 2022-23 के बजट में स्वास्थ्य पर कुल 86,201 करोड़ रूपये खर्च करने का अनुमान है। इसके साथ ही कोविड महामारी से निपटने के लिए 35 हजार करोड़ रूपये का बजट में अतिरिक्त प्रावधान किया है।
- चिकित्सा की भारतीय प्रणाली में छः व्यवस्थाएँ हैं- आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, प्राकृतिक चिकित्सा व होम्योपैथी। भारतीय चिकित्सा प्रणाली को 'आयुष' भी कहते हैं।
- हमारे चारों ओर का वातावरण, जिसमें सभी जैविक व अजैविक तत्त्व शामिल हैं, पर्यावरण कहलाता है। जैविक तत्त्वों में पशु-पक्षी, वन, मत्स्य आदि सभी जीवित तत्त्व आते हैं जबकि अजैविक तत्त्वों में हवा, पानी, मृदा आदि आते हैं।
- पर्यावरण की अपक्षय सोखने की क्षमता को अवशोषी क्षमता कहते हैं। पृथिवी और समुद्र के वातावरण के औसत तापमान में वृद्धि को वैश्विक ऊष्णता कहते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) ने धारणीय विकास की परिभाषा इस प्रकार से की है- ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का समझौता किए बिना पूरा करे, धारणीय विकास कहलाता है।
- हमारी सभ्यता और संस्कृति में वृक्षों, जीवों आदि को महनीय स्थान प्रदान किया गया है। भारत में औषधीय गुणों से युक्त पौधों की 15,000 प्रजातियाँ हैं, जिनमें से 8000 जड़ी बूटियों का उपयोग उपचार में आज भी होता है।
- विकास की दिशा में भारत ने 1951 ई., पाकिस्तान ने 1956 ई. में तथा चीन ने 1953 ई. में अपनी प्रथम पञ्चवर्षीय योजनाएँ प्रारम्भ की थीं। 1980 के दशक तक तीनों देशों की वृद्धि दर व प्रतिव्यक्ति आय भी समान थी।
- वर्ष 1998 में सरकार ने ग्रेट लीप फॉर्वर्ड अभियान शुरू किया, जिसका मुख्य उद्देश्य देश में अधिकाधिक उद्योगों की स्थापना था।
- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के मामले में चीन दुनिया में दूसरा स्थान रखता है, जो 22.5 ट्रीलियन है। जबकि भारत व पाकिस्तान का क्रमशः 9.3 ट्रीलियन व 1.1 ट्रीलियन है।

अध्याय- 20

सामाजिक संरचना और परिवर्तन

- समाज की संरचना विशिष्ट रुप से क्रमवार व नियमित होती है। आधुनिक समय में सामाजिक संरचना शब्द का प्रथम प्रयोग हरबर्ट स्पेंसर ने अपनी पुस्तक प्रिंसिपल ऑफ सोशियोलॉजी में सन् 1885 में किया था। सामाजिक संरचना में सामाजिक व्यवहार के निश्चित प्रतिमान निहित होते हैं।
- शरीर की संरचना में जिस प्रकार हाथ, पैर, आंख, नाक, कान आदि का योगदान है, ठीक उसी प्रकार सामाजिक संरचना में सामाजिक इकाईयों जैसे समूह, समितियाँ, संस्थाएँ, परिवार, सामाजिक प्रतिमान आदि का योगदान होता है।
- सामाजिक संरचना की अवधारणा का विकास ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुष सूक्त में मिलता है- ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी द्बाहु राजन्य: कृत: ऊरो: तदस्य: यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत। (10.90.12) अर्थात् समाजरूपी विराट पुरुष का मुख ब्राह्मण, भुजाएँ क्षत्रिय, जँघाएँ वैश्य और पाद शूद्र बताये गये हैं, जो समाज के अङ्ग के रूप में अपने कर्म करते हुए सम्पूर्ण समाज को पोषित करते हैं।
- सामाजिक संरचना का निर्माण परिवार, संस्थाएँ, समितियाँ, समूह आदि अनेक प्रकार की उप-संरचनाओं से मिलकर होता है।
- सामाजिक स्तरीकरण, ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तियों के समूहों को उनकी प्रतिष्ठा, सम्पत्ति व शक्ति की मात्रा के अनुसार विभिन्न वर्गों में उच्च से निम्न क्रम में वर्गीकृत किया जाता है।
- प्रमुख समाजशास्त्री दुर्खाइम के अनुसार, "एकता समाज का नैतिक बल है तथा यह सहयोग और इस तरह समाज के प्रकार्यों को समझने के लिए बुनियादी अवयव है"।
- प्रतिस्पर्धा को पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा माना जाता है, जिसके अनुसार बाजार इस प्रकार कार्य करता है कि अधिकतम कार्यकुशलता सुनिश्चित हो सके।
- संघर्ष का अर्थ व्यक्ति के हितों में टकराव होता है। समाज में संसाधनों की अल्पता के कारण उन्हें प्राप्त करने की अभिलाषा संघर्ष को जन्म देती है।
- समाज में सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक मूल्यों, रीति-रिवाजों व परम्पराओं, सामाजिक-सांस्कृतिक मापदण्डों आदि में हुए परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है।
- प्राचीनकाल में शिक्षा गुरुकुलों में सामान्यत: खुले आकाश में वृक्षों की छाया में, जंगलों में, नदियों के किनारे, ग्राम या नगर के बाहर प्रदान की जाती थी। उस समय शिक्षा व्यवस्था नि:शुल्क थी।

- समाज में परिवर्तन आया और वर्तमान में शिक्षा आधुनिक सुविधाओं से युक्त बहुमंजिला भवनों में, नगरों एवं ग्रामों के मध्य मोटी फीस लेकर दी जाती है।
- वैश्विक महामारी कोराना के दौरान शिक्षा केन्द्रों के बन्द होने के कारण, आज शिक्षा के नये माध्यम जैसे- ई-कक्षा, आनलाईन अध्ययन, स्मार्ट कक्षा, डिजीटल-शिक्षा आदि का विकास हुआ है।
- प्राचीन काल में जल सभी के लिए नि:शुल्क उपलब्ध था। सामाजिक परिवर्तन के इस दौर में आज जल एक उद्योग का रूप ले चुका है।
- किसी विशेष प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों, मूल्यों तथा परिमापों को बनाए रखना सामाजिक व्यवस्था कहलाता है। सामाजिक व्यवस्था अन्तःक्रियारत व्यक्तियों का समूह है।
- परस्पर सहयोग व सद्भाव, वृहद् संस्कृति (अनेक रीतियां, प्रथाएं आदि), समूह व उप-समूह, सामूहिक एकता, श्रम विभाजन, क्षेत्रीयता, आत्म-निर्भरता आदि सामाजिक व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं।
- गाँव, परिवारों का वह समूह होता है, जो एक निश्चित क्षेत्र में बसा होता है तथा एक विशिष्ट नाम से जाना जाता है। गाँव, नगरों की अपेक्षा छोटे होते हैं। यहाँ परम्परागत सामाजिक परम्पराएं व प्रथाएँ चलती रहती हैं।
- सामान्यतः कस्बों व नगरों दोनों में एक ही प्रकार की व्यवस्था है। दोनों में अन्तर आकार के आधार पर होता है। कस्बे, नगरों की अपेक्षा छोटे होते हैं। जनसंख्या की दृष्टि से बड़े गाँवों की प्रवृत्तियाँ जब नगरीकृत हो जाती हैं, तो उन्हें कस्बा कहा जाता है।

अध्याय- 21

पर्यावरण और समाज

- पर्यावरण का सामान्य अर्थ हमारे चारों ओर का वातावरण है। विस्तृत अर्थ में भौतिक और जैविक परिवेश तथा उनके कारक, जिनका प्राणी के जीवन पर प्रभाव पड़ता है, पर्यावरण कहलाता है।
- गङ्गा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के जलस्रोतों को वन्दनीय माना गया है। वेदों में प्रकृति को माता के रूप में पूजा जाता है। भारत में अग्नि, जल, वायु, पृथिवी को अर्घ्य देने का प्रचलन है।
- हम नित्य सूर्य-चन्द्रमा को नमन करते हैं। तुलसी और पीपल (अश्वत्थ) के बारे में चिन्तन है कि ये दोनों वृक्ष प्रत्येक प्रहर प्राण वायु (ऑक्सीजन) निर्गत करते हैं।
- प्राचीन भारतीय वाङ्मय, धर्म, दर्शन व समाज में पर्यावरणीय चिंतन का आरम्भ वैदिक व संस्कृत वाङ्मय से होता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति को वैदिक संस्कृति या तपोवनी संस्कृति की संज्ञा से अलंकृत किया गया है।
- महर्षि व्यास ने कहा है- यथा हीनं नमोऽर्केण भूः शैलैः खं च वायुना। तथा देशा दिशश्चैव गङ्गाहीना न संशयः॥ अर्थात् जैसे सूर्य के बिना आकाश, पर्वत के बिना पृथिवी और वायु के बिना अन्तरिक्ष की शोभा नहीं होती, उसी प्रकार जो देश और दिशाएँ गङ्गा जी से रहित हैं, उनकी भी शोभा नहीं होती है।
- भारतीय धर्म और दर्शन में श्रीमद् भगवद्गीता का स्थान बहुत पवित्र और आदर्श से युक्त है, गीता में श्रीकृष्ण स्वयं को गङ्गा नदी बताते है- स्रोतसामस्मि जाह्नवी (10.31)।
- मत्स्य पुराण में जल को साक्षात् तीर्थ रूप में आत्मसात करने का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है, मनुष्य के लिए जल का उतना ही महत्त्व है जितना तीर्थ का। अनुद्धृतैरूद्धृतैर्वा जलैः स्नानं समाचरेत्। तीर्थं प्रकल्पयेद् विद्वान मूलमत्रेण मन्त्रवित्॥ अर्थात् कुएँ एवं तालाब आदि के जल से स्नान करते हुए मन्त्रवेत्ता विद्वान को मूलमन्त्र द्वारा उस जल में तीर्थ की कल्पना करनी चाहिए।
- मत्स्य पुराण में कहा गया है- दश कूप-समोवापी, दशवापी समोह्रदः। दश ह्रद-समः पुत्रो, दश पुत्रसमों द्रुम॥ अर्थात् दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब है, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है।
- जैव पर्यावरण में भू-मण्डल के सभी पेड़-पौधे और जीव शामिल हैं। अजैव पर्यावरण में भूमि, जल, वायु अपने विविध भौतिक रूपों में शामिल हैं। ये सभी पर्यावरण के ही अभिन्न अङ्ग हैं।
- प्राकृतिक पर्यावरण से तात्पर्य उन सम्पूर्ण भौतिक शक्तियों, प्रक्रियाओं और तत्त्वों से है, जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव पर पड़ता है। इन शक्तियों के अन्तर्गत सूर्यताप, पृथिवी की दैनिक एवं वार्षिक परिभ्रमण

की गतियाँ, गुरुत्वाकर्षण शक्ति, ज्वालामुखी क्रियाएँ, भूपटल की गति तथा जीवन सम्बन्धी दृश्य सम्मिलित किए गए हैं।

- मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। यह भौतिक पर्यावरण से भिन्न होता है। मानव निर्मित पर्यावरण के अन्तर्गत भवन, पार्क, गाँव, नगर, अस्पताल, सड़क, रेल, बाँध, रीति-रिवाज, खान-पान, त्यौहार आदि आते हैं।
- चिपको आन्दोलन पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा एक आन्दोलन था, जो 1972 ई. में उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल व हिमाचल प्रदेश के उत्तरी भागों में प्रारम्भ हुआ था।
- CNG को संपीड़ित प्राकृतिक गैस (Compressed Natural Gas) कहा जाता है। इस गैस को वाहनों में उपयोग करने के लिए 200-250 कि.ग्रा. प्रति वर्ग सेमी तक दबाकर बनाया जाता है। सी.एन.जी.से वाहन चलाने पर पर्यावरण प्रदूषण तो कम होता ही है साथ ही यह सस्ती भी है।
- उद्योगों, कारखानों, वाहनों एवं तेल शोधनशालाओं से निकली कार्बन डाई आक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड(SO2), नाइट्रिक ऑक्साइड आदि गैसें वायु में घुल जाती हैं तथा वाष्प के साथ क्रिया करके सल्फ्यूरिक अम्ल व नाइट्रिक अम्ल बनाती है। ये अम्ल, वर्षा जल के साथ पृथिवी पर गिरते है, तो इसे अम्लीय वर्षा (ACID RAIN) कहते है।
- ग्रीन हाउस (हरित गृह)प्रभाव एक प्राकृतिक घटना है, जो पृथ्वी के धरातल को गर्म बनाए रखने में मदद करती है। ग्रीनहाउस प्रभाव में सूर्य की ओर से आने वाली ऊर्जा, प्रकाश किरणों के रूप में एक सतह को पार करके ग्रीनहाउस तक आती है। इस ऊर्जा का कुछ भाग मिट्टी, पेड़ पौधों और ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण अवशोषित कर लिया जाता है।
- जल वाष्प ,कार्बन डाई ऑक्साइड, मेथेनओजोन , और नाइट्रस ऑक्साइड आदि प्रमुख ग्रीनहाउस प्रभाव की उपयोगी गैसें हैं। मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन से पृथिवी के तापमान में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

अध्याय- 22

प्रमुख समाजशास्त्री

- समाजशास्त्र विषय की उत्पत्ति में ज्ञानोदय, वैज्ञानिक क्रान्ति, फ्रान्सिसी क्रान्ति व औद्योगिक क्रान्ति का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अत: समाजशास्त्र को 'क्रान्ति के युग' की संतान भी कहा जाता है।
- आगस्ट कॉम्टे को 'समाजशास्त्र का पिता' माना जाता है। पश्चिम के समाजशास्त्रियों कार्ल मार्क्स, मैक्स वैबर व एमिल दुर्खीम को आधुनिक समाजशास्त्र की शास्त्रीय परम्परा का धारक कहा जाता है।
- मनु, याज्ञयवल्क्य, नारद आदि प्राचीन भारतीय सामाजिक चिन्तक थे। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख भारतीय चिन्तक गोविन्द सदाशिव घुर्ये, धुर्जिट प्रसाद मुखर्जी, अक्षय रमनलाल देसाई, एम.एम.श्रीनिवास आदि हैं।
- पश्चिमी यूरोप में 17वीं-18वीं सदी के मध्य संसार के विषय में सोचने-विचारने के नए व मौलिक दृष्टिकोणों का विकास हुआ, जिसे ज्ञानोदय का नाम दिया गया।
- ज्ञानोदय ऐसी विचारधारा है, जिसमें मनुष्य को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के केन्द्र बिन्दु के रूप में स्थापित किया गया है, वहीं दूसरी तरफ विवेक को मनुष्य की मुख्य विशेषता माना है।
- ज्ञानोदय या प्रबोधन मात्र को एक सम्भावना से वास्तविक यथार्थ को बदलने में उन वैचारिक प्रवृत्तियों का योगदान है, जिन्हें हम धर्म निरपेक्षता, वैज्ञानिक व मानवतावादी विचार कहते हैं।
- फ्रान्सिसी क्रान्ति का समय 1789 ई. से 1799 ई. तक रहा है जो यूरोप के इतिहास में एक मील का पत्थर था। रूसो, वाल्टेयर और मॉन्टेस्यू का इस क्रान्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। फ्रान्सिसी क्रान्ति के समय फ्रान्स में लुई 16 वाँ का शासन था।
- क्रान्ति के फलस्वरूप फ्रान्स में अनेक परिवर्तन हुए। लोगों को कानून व राजकीय संस्थाओं के समक्ष समानता, धार्मिक और सामाजिक स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त हुआ था। आधुनिक समाजशास्त्रियों द्वारा समानता, स्वतन्त्रता व बन्धुत्त्व की भावना को फ्रान्सिसी क्रान्ति की देन माना जाता है।
- औद्योगिक क्रान्ति की आरम्भ ब्रिटेन में 18 वीं-19 वीं सदी में वस्त्र उद्योग से हुई मानी जाती है। इसके दो प्रमुख कारण थे- पहला विज्ञान तथा तकनीकी के साथ उद्योगों का मशीनीकरण और ऊर्जा के नये साधनों का प्रयोग। दूसरा, श्रम तथा बाजार को नये रूप में बड़े पैमाने पर संगठित किया जाना।
- इन्सिडोर अगस्त मेरिए फ्रैंकोइस जेवियर कॉम्टे का जन्म 19 जनवरी, 1798 ई. में मौन्टपीलियर, फ्रान्स में हुआ था तथा 1857 ई. को मृत्यु हो गई थी। अगस्त काम्टे एक महान सामाजिक विचारक और अनुभववादी चिंतक थे।

- काम्टे ने अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की है- ए प्रॉस्पेक्टस ऑफ द साइंटिफिक वर्क्स रिक्वायर्ड फॉर द रीऑर्गेनाइजेशन ऑफ सोसाइटी, दि कोर्स ऑफ पॉजिटिव फिलॉसफी, सिस्टम ऑफ पॉजिटिव पॉलिटी, कैचिज्म पॉजिटिविज्म, आदि।
- कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 ई. को राइनलैण्ड (जर्मनी) में हुआ था। 64 वर्ष की अवस्था में 14 मार्च, 1883 ई. को लन्दन में कार्ल मार्क्स निधन हो गया था।
- मार्क्स के अनुसार संसार में अशान्ति एवं असंतोष का कारण गरीबों और अमीरों के बीच का संघर्ष है। इस संघर्ष को उन्होंने वर्ग-संघर्ष कहा है। होली फैमिली, दास कैपिटल, द पॉवर्टी ऑफ फिलॉस्फी इनकी प्रमुख व प्रसिद्ध कृतियाँ है।
- एमिल दुर्खीम का जन्म 15 अप्रैल, 1858 ई. को एपीनल (लॉरेन, फ्रान्स) में तथा मृत्यु 1917 ई. में हुई थी। दुर्खीम ने 'आत्महत्या का सिद्धान्त' में यह सिद्ध कर दिया था कि आत्महत्या एक सामाजिक घटना है। 'डिवीजन ऑफ लेबर सोसाइटी', द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड्स, एजुकेशन एण्ड सोशियोलॉजी' आदि दुर्खीम की प्रमुख रचनाएँ है।
- मैक्स वैबर का जन्म 21 अप्रैल, 1864 ई. को एरफर्ट (जर्मनी) के पर्शियन परिवार में हुआ था तथा मृत्यु 1920 ई. में हुई थी। दि रिलीजन ऑफ चाइना, दि रिलीजन ऑफ इण्डिया, जनरल इकॉनोमिक हिस्ट्री आदि मैक्स वैबर प्रमुख रचनाएँ हैं।
- समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व की सम्पूर्ण अवधारणा का विधान ऋग्वेद के सामनस्य सूक्त (10.91) में हुआ है- समानी व: आकूति: समाना हृदयानि व:। समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥ (10.91.4) अर्थात् सबका हृदय व मन समान हों और परस्पर मतभेद न हो।
- एक से अधिक लोगों के समुदायों से मिलकर निर्मित वृहत् मानव समूह को समाज कहते हैं, जिसमें सभी लोग मिलकर मानवीय क्रिया-कलाप करते हैं। समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत सामाजिक क्रिया-कलापों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।
- स्मृतिकारों (समाजशास्त्रियों), विधि-निर्माताओं में मनु, नारद, याज्ञवल्क्य और पराशर सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा निर्मित सामाजिक विधि-विधान भारतीय समाज व्यवस्था की रीढ़ है।
- मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति वर्तमान में सम्पूर्ण भारत में आधिकारिक कार्यों के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत है। याज्ञवल्क्य स्मृति को विशेषरूप से हिन्दू विधि के सभी मामलों में आधिकारिक कार्यों हेतु तथा न्यायनिर्णय में भी परामर्श में लिया जाता है।
- स्मृतिमुक्ताकलाप, स्मृतिसन्दर्भ एवं निर्णयसिन्धु आदि धर्मशास्त्र निबन्धों में अनेक समाजशास्त्रीय विषय निबन्धित है। भीष्म पितामह, महात्मा विदुर महाभारत के प्रसिद्ध चिन्तक तथा समाजशास्त्री रहें हैं।

- पितामह भीष्म का युधिष्ठिर को उपदेश, विदुर नीति, नारद स्मृति, के साथ-साथ बोधायन, आपस्तम्ब और कात्यायन ऋषियों द्वारा रचित धर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों, श्रौतसूत्रों में समाज शास्त्रीय विचार प्राप्त हैं।
- पी. वी. काणे की प्रसिद्ध कृति 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में मनु के विषय में कहा गया है कि मनु, मानव जाति के आदिपिता हैं। ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों की परम्परा में आते हैं। मनु से उत्पन्न होने वाली सन्ततियों को मानव कहा गया है, 'मानव्यो हि प्रजाः'। भारतवर्ष में सर्वप्रथम मनु ने ही यज्ञ परम्परा का विकास किया था।
- नारद स्मृति के अनुसार मनु ने मानव धर्मसूत्र (मानव धर्मशास्त्र) की रचना की थी। मनुस्मृति में कुल 12 अध्याय तथा 2684 श्लोक हैं। लुई जैकोलिऑट (Louis Jacolliot) की पुस्तक The Bible in India- Hindoo Origin of Hebrew and Christian Revelation में उल्लेख है कि "मनुस्मृति ही वह आधारशिला है, जिसके ऊपर मिस्र, पर्शियन, ग्रेसियन और रोमन कानूनी संहिताओं का निर्माण हुआ है"।
- याज्ञवल्क्य एक ऋषि और दार्शनिक के साथ-साथ एक समाजशास्त्री भी थे। याज्ञवल्क्य, आचार्य वैशाम्पायन के शिष्य और राजा जनक के गुरु थे। शास्त्रों में इनको 'वाजसनेय' भी कहा गया है। याज्ञवल्क्य को 'नेति नेति' (यह नहीं, यह भी नहीं) के सिद्धान्त का प्रवर्तक भी माना जाता है।
- राहुल सांस्कृतायन ने अपनी पुस्तक "वोल्गा से गंगा" में उल्लेख किया है कि याज्ञवल्क्य और जैवलि ने उपनिषदों के विकास और समाज में उनको प्रतिष्ठित करने का कार्य किया था।
- याज्ञवल्क्य की प्रमुख कृति 'याज्ञवल्क्य स्मृति' और 'याज्ञवल्क्य शिक्षा' है। याज्ञवल्क्य स्मृति पर विज्ञानेश्वर कृत मिताक्षरा टीका का प्रयोग भारतीय न्यायालयों में प्रमाण के रूप में किया जाता है।
- नारद, ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं। शास्त्रों में नारद को ईश्वर का मन कहा गया है। नारद का समाज के सभी वर्गों में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। समय-समय पर सभी ने उनसे परामर्श लिया है।
- भगवान श्री कृष्ण ने नारद की महत्ता को स्वीकार करते हुए श्रीमद्भगवद्गीता कहा है- देवर्षीणाम् च नारदः।(10.16) देवर्षियों में मैं नारद हूँ।
- नारद की प्रमुख कृतियाँ नारद पञ्चरात्र और नारद स्मृति हैं। नारद स्मृति में सामाजिक कार्य प्रणाली, जैसे- न्याय, ऋणाधान, सहकारिता, दत्ताप्रदानिक (अनुबन्ध तोड़ना), उपनिधि (जमानत), अभ्युपेत्य-अशुश्रूषा (सेवा अनुबंध को तोड़ना), वेतनस्य अनपाकर्म (वेतन नहीं देना) आदि का उल्लेख है।
- 1774 ई. में विलियम जोन्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बङ्गाल की स्थापना को भारत में समाजशास्त्र विषय का प्रारम्भिक रूप माना जाता है।
- भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र विभाग की स्थापना मुम्बई विश्वविद्यालय में (1914 ई.) हुई थी।

- 1969 ई. में 'इण्डियन काउन्सिल ऑफ सोशल साइन्स रिसर्च' की स्थापना हुई। भारतीय विद्वानों का सम्पर्क विश्व के अन्य देशों के विद्वानों से हुआ, जिसके पश्चात प्रकाशन व शोध के क्षेत्र में वृद्धि हुई।
- गोविन्द सदाशिव घुर्ये का जन्म 12 दिसंबर, 1893 ई. को मालवन (महाराष्ट्र) में तथा मृत्यु 1983 ई. में हुई थी। घुर्ये की प्रमुख रचनाएँ-कास्ट एंड रेस इन इण्डिया, इण्डियन साधूज, 'सिटीज एण्ड सिविलाइजेशन, इण्डियन कॉस्ट्यूम' हैं।
- धुर्जिट प्रसाद मुखर्जी का जन्म 5 अक्टूबर, 1894 ई. में तथा मृत्यु 1961 ई. में हुई थी। मुखर्जी एक प्रसिद्ध प्रोफेसर व समाजवादी विचारक थे। प्रोफेसर मुखर्जी ने भारत की सामाजिक व्यवस्था को ही उसका निर्णायक व विशिष्ट लक्षण माना है। मॉडर्न इण्डिया कल्चर और बेसिक कॉन्सेप्ट ऑफ सोशियोलॉजी इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
- अक्षय रमनलाल देसाई का जन्म 26 अप्रैल 1915 ई. में तथा मृत्यु 1994 ई. में हुई थी। देसाई की प्रमुख रचना 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि' और 'भारत में ग्रामीण समाज शास्त्र' हैं।
- देसाई ने लोक कल्याणकारी राज्य के विषय में कहा था कि लोक कल्याणकारी राज्य एक सकारात्मक राज्य होता है और इसकी अर्थव्यवस्था मिश्रित होती है।
- एम.एन. श्रीनिवास (1916 ई.- का जन्म 16 नवंबर, 1916 ई. में तथा मृत्यु 1999 ई. हुई थी। भारतीय गाँवों, दक्षिण भारत में जाति व जाति प्रथा, सामाजिक स्तरीकरण, संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण जैसे विषयों पर लेखन कार्य किया था। इनकी प्रमुख रचनाएँ मैरिज एण्ड फैमिली इन मैसूर, विलेज कास्ट जेंडर एण्ड मेथ्ड आदि प्रमुख हैं।
- एम.एन. श्रीनिवास द्वारा गाँवों पर लिखे गए लेख दो प्रकार के हैं- पहला, गाँवों में किए गए क्षेत्रीय कार्यों का नृजातीय ब्यौरा व इन ब्यौरों पर परिचर्चा तथा दूसरा, भारतीय गाँव सामाजिक विश्लेषण की एक इकाई के रूप में कैसे कार्य करते हैं।

अध्याय- 23

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था

- भारत प्राचीन समय से विश्व शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसलिए भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। हमारे यहाँ औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्र थे।
- औपचारिक शिक्षा के केन्द्रों में मठ, मन्दिर, आश्रम व गुरुकुल सम्मिलित थे। इनके अतिरिक्त परिवार, पुरोहित, पण्डित, सन्यासी और त्यौहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा दी जाती थी।
- गुरुकुल प्रायः वनों, उपवनों, गाँवों व नगरों में होते थे। वाल्मीकि, सान्दीपनि, काण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में स्थित थे। यहाँ वेदों के साथ-साथ दर्शन शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, इतिहास तथा समाज शास्त्र का भी अध्ययन-अध्यापन होता था।
- प्राचीनकाल में तक्षशिला, नालंदा, कान्यकुब्ज (कन्नौज), धारा , तंजौर, काशी, कर्नाटक, नासिक आदि शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे।
- भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश मॉडल पर आधारित है, जिसे 1835 ई. में लॉर्ड मैकाले द्वारा लागू किया गया था।
- 1968 ई. में देश में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई। इस शिक्षा नीति में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर, उनको देश का आदर्श नागरिक बनाना था। भारत में दूसरी शिक्षा नीति 1986 ई. में लागू की गई, जिसे 10+2+3 शिक्षा प्रणाली कहा जाता है।
- डिजिटल शिक्षण में पीपीटी, वीडियो प्रस्तुतियाँ, ई-लर्निंग विधियों, अभ्यास सम्बन्धी डेमो, ऑनलाइन प्रशिक्षण और अन्य डिजिटल पद्धतियों या प्लेटफार्मों के उपयोग के साथ कक्षा में शिक्षण अत्यधिक संवादात्मक हो गया है।
- शिक्षा व्यक्ति के मानसिक और बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति में नये-नये विचारों का सृजन होता है।
- शिक्षा, व्यक्ति को सम्पूर्ण बनाती है, जिससे व्यक्ति के मस्तिष्क में नये-नये विचारों का जन्म होता है और वह समाज व राष्ट्र के लिए योगदान देता है।
- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का चारित्रिक व व्यक्तित्व विकास है। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास का विकास होता है। उपनिषदों में बताया गया है कि बिना शिक्षा के मानव को पशु तुल्य माना गया है।
- सामाजिक सद्भावना के विकास के लिए आधुनिक शिक्षा में यह व्यवस्था की गई है कि समाज का कोई भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित न रह जाए।

- आजकल मल्टीमीडिया (बहुमाध्यम) शिक्षा का प्रचलन है, जिसमें श्रव्य-दृश्य सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। यह एक उचित कदम है, किन्तु इसके साथ-साथ विद्यार्थी वर्ग की रूचि की विविधता को ध्यान में रखना होगा।
- आज हम जो शिक्षा प्रणाली अपनाये हुए है उसका सम्बन्ध केवल किताबी ज्ञान से है। इस शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि छात्र का लक्ष्य केवल डिग्री प्राप्त करना है।
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है। शिक्षा के आधुनिकीकरण से हमारे सनातनी संस्कार गायब से हो गए हैं। बालक के साथ-साथ उसके अभिभावक का भी प्रवेश के समय साक्षात्कार लिया जाता है।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक दोष यह भी है कि इसमें रचनात्मकता का अभाव है। बालकों को छोटी-छोटी कक्षाओं में विशाल पाठ्यक्रम पढ़ना पड़ता है, जिससे उनको यह पढ़ाई नीरस लगने लगती है। प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में बालक का बचपन खो सा गया है।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रायः सैद्धान्तिक ज्ञान की बहुलता और प्रायोगिक ज्ञान का अभाव है। बालकों को सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ-साथ प्रायोगिक ज्ञान की महती आवश्यकता हैं।
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के दोषों में सुधार के लिए देश में अभी हाल ही में 29 जुलाई 2020 ई. को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' लागू की गई है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पाँचवी कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में बालकों को शिक्षा दी जाएगी। इसे बाद में कक्षा आठ तक भी बढ़ाया जा सकता है।
- स्कूल पाठ्यक्रम के पुराने ढ़ांचे 10+2+3 के स्थान पर अब 5+3+3+4 की नई पाठ्यक्रम संरचना लागू की जाएगी। जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 व 14-18 की आयु के बच्चों के लिए हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में प्री-स्कूलिंग (तीन साल की आंगनबाड़ी) के साथ 12 साल की स्कूली शिक्षा होगी। इसके तहत् बालकों की शुरूआती स्टेज के लिए 3 साल की प्री–प्राइमरी और पहली तथा दूसरी कक्षा को रखा गया है। अगली स्टेज में तीसरी, चौथी और पाँचवी कक्षा को रखा गया है। इसके बाद मिडिल स्कूल यानी कक्षा 6–8 तथा अन्त में माध्यमिक स्तर यानी कक्षा 9-12 को रखा गया है।
- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की प्राप्ति को सही ढंग से सीखने के लिए अत्यन्त जरूरी एवं पहली आवश्यकता मानते हुए एनईपी-2020 में विशेष जोर दिया गया है।

परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्रं.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

क्रं.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in